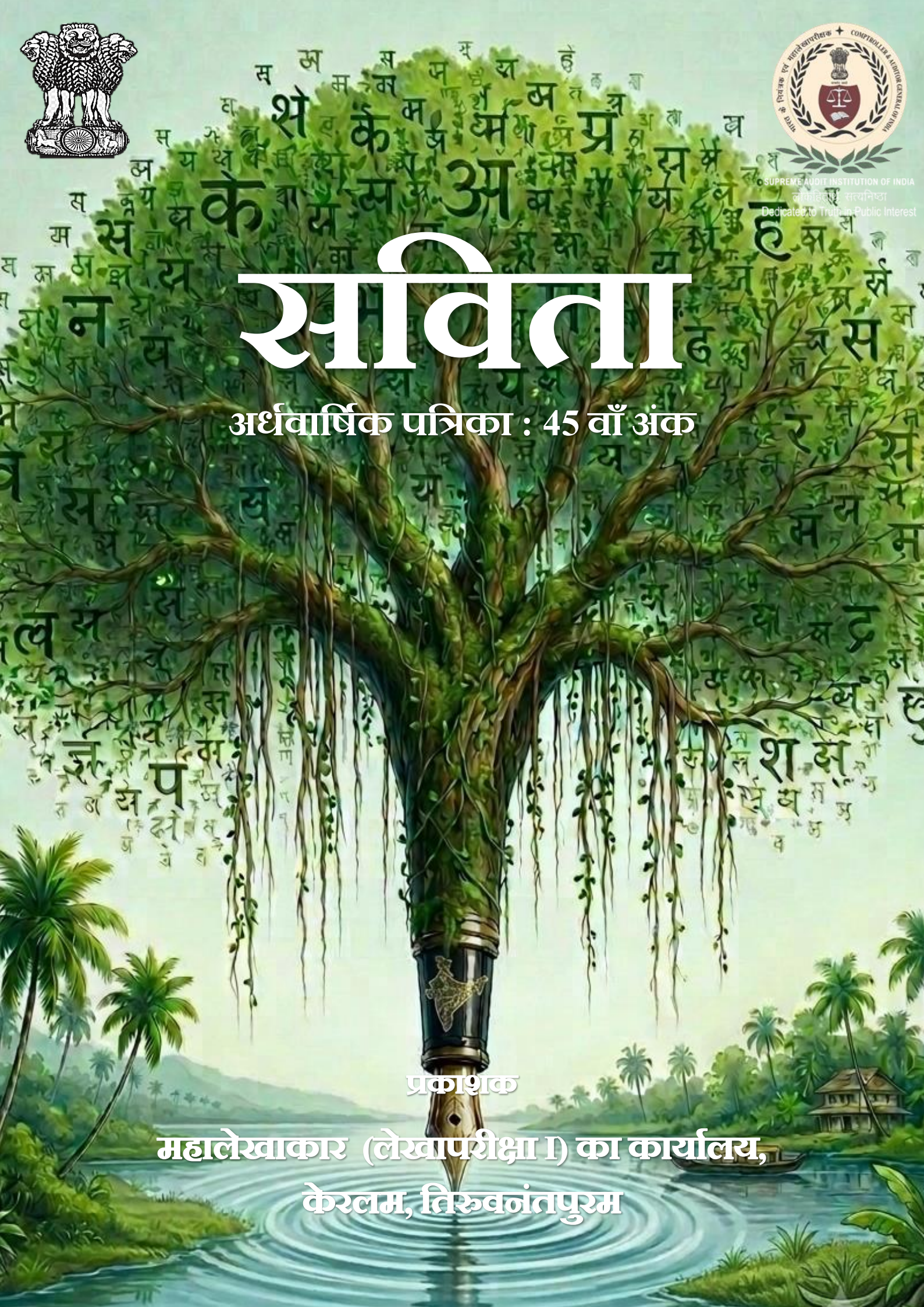
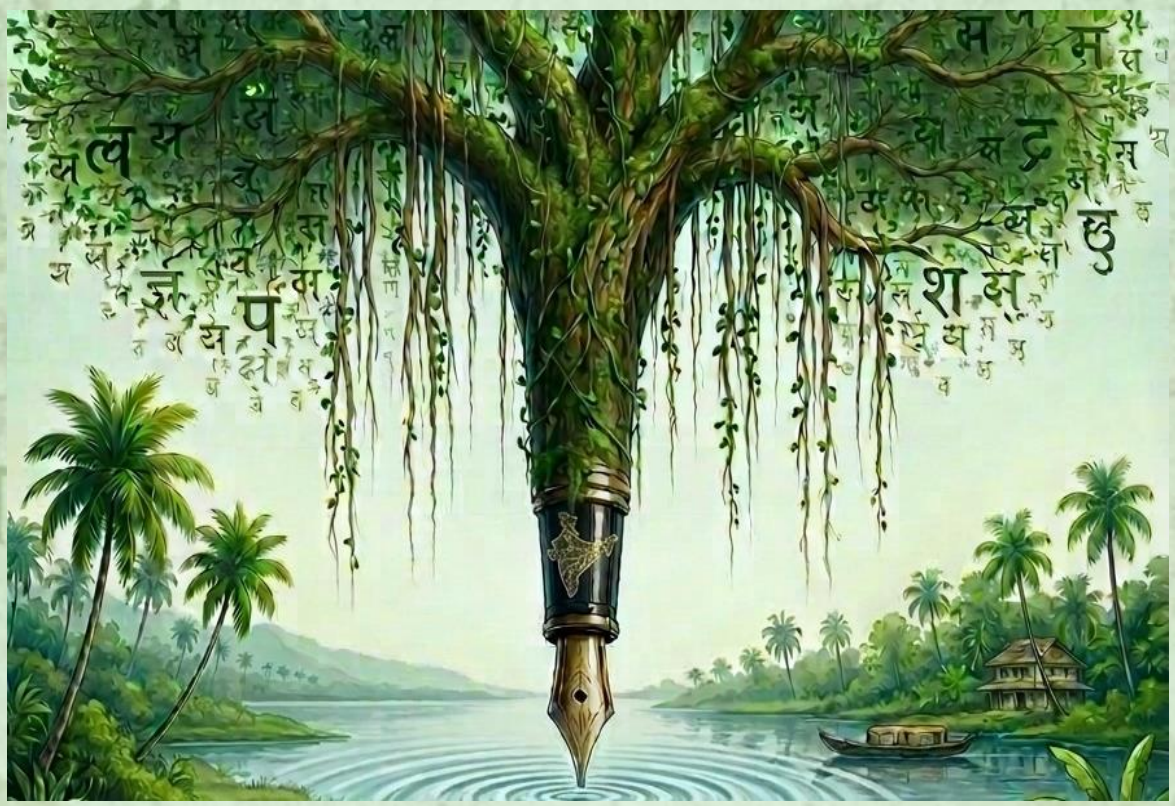

सविता
अर्धवार्षिक पत्रिका : 45 वाँ अंक
प्रकाशक
महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय,
केरलम, तिरुवनंतपुरम

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

अर्धवार्षिक पत्रिका : 45 वाँ अंक



प्रकाशक

महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय,

केरलम, तिरुवनंतपुरम

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

अर्ध-वार्षिक हिन्दी गृह पत्रिका- 45 वां अंक

पत्रिका परिवार

संरक्षक

सुश्री प्रीति अब्राहम, महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्री नसीफ़ अब्दुल खादर, वरि. उप महालेखाकार/प्रशासन

सदस्य

सुश्री आशा जे आर, सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री विष्णु एस पी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सुश्री आकांशा गहलोत, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

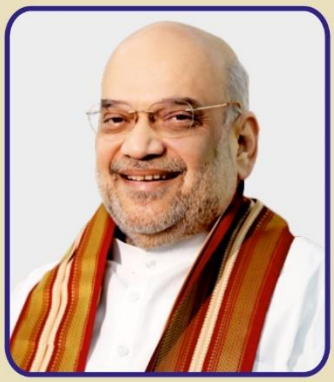
सुश्री शिवानी, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

कवर पेज : सुश्री सांद्रा सतीश, उप महालेखाकार/एएमजी I

*पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं। सम्पादन मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है।

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो,

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ!

भाषा चंदन की उस सुगंध के समान है, जो हमारी संस्कृति, संस्कार, ज्ञान, परंपरा और राष्ट्रीय चेतना की जीवंत धारा बन जाती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हमारी भाषाएँ, उपभाषाएँ और बोलियाँ हमारी सभ्यता की स्मृति, लोकजीवन की संवेदना और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला हैं। स्वभाषा व्यक्ति को अपनी जड़ों से जोड़ती है और उसे आत्मविश्वास के साथ अपने विचारों, अनुभवों और आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करने की शक्ति देती है।

हमारा भारत भाषाई विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि की अनुपम भूमि है। यहाँ प्रत्येक भाषा अपने साथ एक इतिहास, लोकपरंपरा और जीवन–दृष्टि लेकर चलती है। यही भाषाई बहुलता भारत की 'विविधता में एकता' की भावना को सशक्त बनाती है। हिंदी ने इसी विविधता के बीच संवाद, संपर्क और समन्वय की भाषा के रूप में देश के विभिन्न क्षेत्रों, वर्गों और समुदायों को जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिंदी का विकास भी तभी सार्थक है, जब वह सभी भारतीय भाषाओं के सम्मान, संरक्षण और संवर्धन के साथ आगे बढ़े। हिंदी किसी भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं, बल्कि भारतीय भाषाओं के बीच आत्मीय संवाद और राष्ट्रीय एकात्मता की महत्वपूर्ण कड़ी है।

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ने भाषा की वास्तविक शक्ति को जनता के जीवन और उसके सहज प्रयोग से जोड़ा था। उनका यह भाव हमें स्मरण कराता है कि कोई भी भाषा तभी जीवंत बनती है, जब वह समाज के सामान्य जन के श्रम, संवेदना, आकांक्षा और आत्मविश्वास की भाषा बने। हिंदी की शक्ति भी इसी लोक–संपर्क, सरलता, सहजता और व्यापक स्वीकार्यता में निहित है।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान **स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा** के विचारों ने राष्ट्रीय चेतना को नई ऊर्जा दी। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने यह अनुभव किया था कि स्वभाषा और स्वाभिमान के बिना स्वराज की संकल्पना अधूरी रहेगी। हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं ने जन–जागरण, राष्ट्रीय एकता और स्वतंत्रता के विचार को जन–जन तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिंदी ने देश के अनेक हिस्सों में स्वतंत्रता आंदोलन के विचारों, संदेशों और संकल्पों को सामान्य जन तक पहुँचाने की सशक्त संपर्क भाषा के रूप में कार्य किया।

यह वर्ष राष्ट्रीय गीत **'वंदे मातरम' के 150 वर्षों के स्मरण** का भी विशेष अवसर है। आज जब देश **'विकसित भारत@2047'** के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तब 'वंदे मातरम' का भाव हमें यह प्रेरणा देता है कि विकास की यात्रा अपनी विरासत, अपनी भाषाओं, अपनी स्वभाषा और अपने सांस्कृतिक आत्मविश्वास के साथ ही सार्थक होती है।

14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक यात्रा का महत्वपूर्ण क्षण था। यह निर्णय **शासन को जनसामान्य के अधिक निकट** लाने, **लोक–संवाद को सशक्त** करने और **भारतीय भाषाओं के प्रति राष्ट्रीय सम्मान को अभिव्यक्त** करने का प्रतीक था। हिंदी दिवस हमें इसी ऐतिहासिक संकल्प का स्मरण कराता है और राजभाषा हिंदी को जनसेवा, सुशासन और राष्ट्रीय संवाद का प्रभावी माध्यम बनाने की प्रेरणा देता है।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में अमृतकाल का वर्तमान दौर भारत की सांस्कृतिक विरासत, सभ्यतागत आत्मविश्वास और आधुनिक प्रगति के अद्भुत समन्वय का कालखंड है। प्रधानमंत्री जी का **'विकास भी, विरासत भी'** का मंत्र हमें यह दिशा देता है कि आधुनिक भारत का निर्माण अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए ही सशक्त रूप से किया जा सकता है। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति का अर्थ यह भी है कि हम अपनी भाषाओं में सोचने, काम करने, सृजन करने और विश्व से संवाद करने का आत्मविश्वास विकसित करें। **इस दिशा में राजभाषा हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।**

इसी दृष्टि से राजभाषा विभाग द्वारा तकनीकी और संस्थागत स्तर पर अनेक महत्वपूर्ण पहलें की गई हैं। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित 'भारती'; भारतीय भाषाओं के बीच संवाद को सहज बनाने की दिशा में एक दूरदर्शी प्रयास है। वर्ष 2024 में स्थापित **'भारतीय भाषा अनुभाग'** केंद्र और राज्यों के बीच पत्राचार तथा प्रशासनिक संवाद को भारतीय भाषाओं में अधिक सुगम बना रहा है। इसी प्रकार, 8.27 लाख से अधिक प्रविष्टियों वाला **'हिंदी शब्द सिंधु'** डिजिटल शब्दकोश हिंदी सहित भारतीय भाषाओं की शब्द–संपदा को जोड़ते हुए ज्ञान–साझाकरण का समृद्ध माध्यम बन रहा है। ये पहलें हिंदी को तकनीक, प्रशासन और ज्ञान–विनिमय की आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप और अधिक सक्षम बना रही हैं।

हिंदी दिवस केवल भाषा के प्रति गौरव व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि स्वभाषा में अपना कार्य, चिंतन और सृजन करने के लिए संकल्पित होने तथा संविधान–निर्माताओं के प्रति कृतज्ञ श्रद्धांजलि अर्पित करने का अवसर भी है। आइए, इस पावन अवसर पर हम हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं को विकसित, आत्मनिर्भर और सशक्त भारत की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाने का संकल्प लें।

आप सभी को पुनः हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2026

(अमित शाह)



संदेश

'सविता' पत्रिका का 45 वाँ अंक प्रकाशित होते देखकर मुझे विशेष प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका पिछले कई वर्षों से हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार का सशक्त माध्यम बनी हुई है। राजभाषा नीति केवल एक प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है। सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है। तकनीकी प्रगति ने हिन्दी में कार्यालयीन कार्य को पहले से अधिक सहज और सरल बनाया है। कंठस्थ व भाषिणी जैसे अनुवाद टूल हिंदी के प्रयोग की नई संभावनाएं खोल रहे हैं। इन तकनीकों के सदुपयोग से हिंदी केवल अनुवाद की भाषा से दैनिक कार्यालयीन कामकाज की भाषा बन गई है। बदलते कार्यालयीन परिवेश में हिंदी का प्रभावी प्रयोग हमारी कार्य संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

इस दिशा में 'सविता' जैसी पत्रिकाएँ कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि जगाने का उत्कृष्ट कार्य करती हैं। इस अंक में प्रकाशित रचनाओं की विविधता स्वयं इस बात का प्रमाण है कि हमारे कार्यालय के कर्मचारी व उनके परिवारजन न केवल कल्पनाशील हैं, बल्कि संवेदनशील रचनाकार भी हैं। मैं सभी योगदानकर्ताओं की सृजनात्मकता की सराहना करती हूँ तथा संपादक मंडल को उनके समर्पित प्रयासों के लिए बधाई देती हूँ। आशा है भविष्य में भी इस पत्रिका की गुणवत्ता और लोकप्रियता में निरंतर वृद्धि होती रहेगी। राजभाषा हिन्दी के निरंतर विकास एवं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रीति अब्राहम

महालेखाकार



संदेश

यह हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि हम आपके समक्ष अपनी पत्रिका सविता का 45 वां अंक प्रस्तुत कर रहे है। यह पत्रिका केवल लेखों, कवित्तों और कहानियों का संकलन नहीं,बल्कि हमारे विचारों, भावनाओं, रचनात्मकता और सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है । हिंदी हमारी राजभाषा ही नहीं , बल्कि व्यापक रूप से संपर्क और अभिव्यक्ति की एक महत्वपूर्ण भाषा है,जो विविधताओं से भरे हमारे देश को भावनात्मक रूप से जोड़ने का कार्य करती है । साहित्य समाज का दर्पण होता है, और ऐसी पत्रिकाएँ नई प्रतिभाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से समाज, संस्कृति और समकालीन विषयों पर अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पाठकों को ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक तथा चिंतनशील अनुभव प्रदान करेंगी । मैं सभी लेखकों, संकलनकर्ताओं, रचनाकार और सहयोग देने वाले सभी व्यक्तियों को हार्दिक बधाई एंव शुभकामनाएँ देता हूँ।

आशा है कि यह अंक आपको केवल पढ़ने का आनंद ही नहीं देगा बल्कि आपको सोचने और आगे बढ़ने की प्रेरणा भी प्रदान करेगा ।

आप सभी को सफल एंव आनंददायक पठन की शुभकामनाएँ ।

एस सुरेश कुमार

उप महालेखाकार /एएमजी III



संदेश

किसी भी संस्था की पहचान केवल उसके कार्यों से नहीं होती, बल्कि उन लोगों से भी होती है जो उसे अपनी संवेदनाओं, विचारों और सृजनशीलता से समृद्ध बनाते हैं। हमारे कार्यालय की गृह पत्रिका 'सविता' उसी सामूहिक सृजन का सुंदर प्रतिबिंब है। इसके नवीनतम अंक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

दैनिक कार्यों की व्यस्तता में हम सब अपने-अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हैं। ऐसे में लेखन और पठन हमें कुछ क्षण ठहरकर स्वयं से संवाद करने, अपने अनुभवों को शब्द देने और दूसरों के विचारों से जुड़ने का अवसर प्रदान करते हैं। इस अंक के लिए मैंने भी एक छोटी-सी रचना लिखने का विनम्र प्रयास किया है। मेरा विश्वास है कि किसी रचनात्मक पहल को केवल प्रोत्साहित करना ही पर्याप्त नहीं, बल्कि उसमें अपनी छोटी-सी सहभागिता निभाना भी उतना ही आवश्यक है। पद और दायित्व समय के साथ बदलते रहते हैं, पर सीखने की जिज्ञासा, भाषा के प्रति प्रेम और लेखन का आनंद जीवन भर हमारे साथ बने रहने चाहिए।

मैं इस अंक के सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देती हूँ। साथ ही, इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले संपादक मंडल के सभी सदस्यों का उनके परिश्रम और सहयोग के लिए हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। मुझे विश्वास है कि 'सविता' का यह अंक पाठकों के लिए एक सुखद एवं सार्थक पाठन-अनुभव सिद्ध होगा। आशा है कि आने वाले समय में भी हम सभी अपने विचारों, अनुभवों और रचनाओं के माध्यम से इस पत्रिका को निरंतर समृद्ध बनाते रहेंगे।

सान्द्रा सतीश

उप महेलखाकार / एएमजी I



संदेश

हमारी गृह पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर हर्ष और गर्व महसूस हो रहा है। इस पत्रिका का निरंतर प्रकाशन यह साबित करता है कि यह मात्र एक औपचारिकता नहीं बल्कि हमारे कार्यालय के कर्मचारियों एवं उनके परिजनों की हिंदी भाषा में वास्तविक रुचि है। यह पत्रिका एक सुंदर उदाहरण है कि कैसे हिंदीतर भाषी अपनी संस्कृती, अपने अनुभाव व अपनी रचनात्मकता हिन्दी भाषा के माध्यम से बखूबी व्यक्त कर रहे हैं। यही लगन इस पत्रिका को विशिष्ठ बनाती है और विवधताओं में एकता का प्रमाण देती है।

इस अंक में प्रकाशित प्रत्येक रचना अपने आप में अद्वितीय है। संपादक मण्डल ने इन सभी रचनाओं को हमारे सामने प्रस्तुत करने का सुंदर प्रयास किया है। इस पत्रिका के प्रकाशन पर मैं सभी योगदानकर्ताओं की सृजनात्मकता की सराहना करती हूँ तथा संपादक मंडल को उनके समर्पित प्रयासों के लिए बधाई देती हूँ। आशा है कि इसी भांति भविष्य में भी यह पत्रिका अपनी अनोखी व मन को मोह लेने वाली रचनाओं के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत होती रहेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

आनी जॉर्ज

उप महालेखाकार / एएमजी II



संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

'सविता' के 45 वें अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पण की एक जीवंत मिसाल है, जो वर्षों से निरंतर हमारे कार्यालय के कर्मचारियों एवं उनके परिवारजनों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करती आ रही है।

'सविता' जैसी पत्रिकाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि ये कर्मचारियों को हिंदी में लिखने, सोचने और अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।यह अंक हमारे कर्मचारियों द्वारा प्रस्तुत की गयी कविताएं, कहानियाँ ज्ञानवर्धक लेख, और प्रेरणादायक अनुभवों से सम्पन्न है । हमारा उद्देश्य केवल जानकारी देना ही नहीं बल्कि पाठकों में जिज्ञासा, चिंतन और रचनात्मकता को भी प्रोत्साहित करना हैं । आपके योगदान ने इस पत्रिका को एक जीवंत रूप दिया है और यह सिद्ध कर दिया है कि हिन्दी भाषा हमारी भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम हैं।

इस अंक को तैयार करने में जिन साथियों ने अपनी रचनाएँ भेजीं, उनकी रचनात्मकता और उत्साह इस पत्रिका की सबसे बड़ी पूँजी है। मैं हृदय से उन सभी रचनाकारों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपनी व्यस्तताओं के बावजूद समय निकालकर अपनी अनमोल रचनाएँ हमें भेजीं। साथ ही, संपादक मंडल का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने परिश्रम कर इस अंक को इस स्वरूप में तैयार किया।

आशा है यह अंक आप सभी को पसंद आएगा और भविष्य में और भी अधिक कर्मी इस पत्रिका के लिए अपनी रचनाएँ भेजने हेतु प्रेरित होंगे। आपकी बहुमूल्य प्रतिक्रियाएं एवं सुझाव हमारे लिए अत्यंत प्रेरणादायी और निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

शुभकामनाओं सहित,

नसीफ

नसीफ अब्दुल खादर

वरि. उप महालेखाकार (प्रशासन)

अनुक्रमणिका

1	कुछ हिसाब शंब्दों के भी (लेख)	सुश्री सांद्रा सतीश, उप महालेखाकार
2.	सीएजी – आईसीएसएसआर संगोष्ठी (केरल अध्याय): 'केरल के वित्त की स्थिति' और 'शहरी स्थानीय निकायों में अपशिष्ट प्रबंधन'	
3.	आज़ाद (कविता)	श्री रितेश कुमार शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
4.	नियम-आधारित से भूमिका-आधारित: योग्यताओं का व्यावहारिक प्रयोग(लेख)	श्री अरविन्द आर, लेखापरीक्षक
5.	भीड़ (कविता)	श्री अगिल पी के, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
6	जंगली चमेली (काट्टुमुल्ला) (कहानी)	सुश्री बिन्दु केशवन, वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
7	भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक (लेख)	श्री आदिशंकर एस एस पुत्र संध्या पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
8	मार्च 2023 को समाप्त अवधि के लिए भा.नि.म.ले.प. की रिपोर्ट केरल सरकार, वर्ष 2025 की रिपोर्ट सं 05 (अनुपालन लेखापरीक्षा – सिविल)	
9	भगवान का अवतार कहाँ और क्यों होता है?(लेख)	श्री उण्णिकृष्णन टी, सहायक लेखापरीक्षक



10	मेरे हाथ का 'स्मार्ट' गुलाम (लेख)	श्री अविनाश नाथ, लेखापरीक्षक
11	विविधता में एकता (कविता)	सुश्री शेबा ई, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
12	देख रही थी मैं आकाश(कविता)	सुश्री नैनसी नेमवाल, सहायक लेखापरीकक्षा अधिकारी
13	विश्व व्यवस्था: एक-ध्रुवीय से बहुध्रुवीय तक (लेख)	सुश्री श्रुति के नायर, आशुलिपिक ग्रेड II
14.	गीता-रहस्य(लेख)	श्री अमित कुमार गिरी, सहायक लेखापरीकक्षा अधिकारी
15	पहली नौकरी का पहला दिन(लेख)	श्री सोनू कुमार मीणा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
16	मदद की पुकार (कहानी)	सुश्री तीर्था कृष्णा, पुत्री उण्णिकृष्णन टी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
17	पिता (कविता)	श्री अनिल कुमार के, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
18	घर से दूर,सपनों के करीब (लेख)	श्री यश कुमार, लेखापरीक्षक
19	व्यावसायिक चिकित्सा (लेख)	सुश्री अज़िन जी. नेल्लिस्सेरी पुत्री गॉडसन पॉल एन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
20	नारीवाद वास्तव में क्या है? (लेख)	सुश्री गौरीआनंदन एस एस पुत्री संध्या पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक





सुश्री सांद्रा सतीश
उप महालेखाकार

कुछ हिसाब शब्दों के भी

हम जीवन भर संख्याओं का हिसाब रखते हैं। पर कहीं एक अदृश्य लेखा-पुस्तक ऐसी भी होती है, जिसमें हमारे शब्द, हमारा व्यवहार और हमारी संवेदनाएँ दर्ज होती रहती हैं। शायद जीवन के अंत में सबसे पहले उसी का मिलान होता है।

दिन भर हमारा साथ संख्याओं से रहता है । आँकड़े, अभिलेख, प्रमाण और निष्कर्ष-इन्हीं के बीच हमारा अधिकांश समय बीतता है । धीरे-धीरे आँखें ऐसी अभ्यस्त हो जाती हैं कि छोटी-सी त्रुटि भी छिप नहीं पाती। कोई संख्या मेल न खाए, कोई तथ्य अधूरा रह जाए, तो मन सहज ही ठिठक जाता है । शायद यही हमारे कार्य की सबसे बड़ी विशेषता है.....हर बात को ध्यान से देखना, समझना और परखना ।

पर एक दिन अचानक मन ने एक ऐसा प्रश्न पूछा, जिसका उत्तर किसी फाइल में नहीं मिला । क्या हमारे शब्दों का भी कोई हिसाब होता है ? पहले तो यह प्रश्न थोड़ा अजीब लगा । शब्दों का भी हिसाब ! शब्द तो कहे जाते हैं, हवा में घुल जाते हैं और बात वहीं समाप्त हो जाती है । लेकिन क्या सचमुच ऐसा होता है ? धीरे-धीरे लगा कि शायद नहीं ।

शायद हमारे भीतर कहीं एक अदृश्य लेखा-पुस्तक होती है । उसमें संख्याएँ नहीं लिखी जातीं । उसमें दर्ज होते हैं वे शब्द, जो हमने किसी से कहे थे... और वे भी, जो हमें किसी ने कहे थे । कितनी विचित्र बात है ! वर्षों पहले सुना हुआ एक स्नेहभरा वाक्य आज भी मन को मुस्कुरा देता है । किसी शिक्षक का विश्वास, किसी मित्र का उत्साह, किसी अपने का कहा हुआ "मैं हूँ न"-समय बीत जाता है, परिस्थितियाँ बदल जाती हैं, पर कुछ शब्द हमारे भीतर वैसे ही सुरक्षित रहते हैं । शायद इसलिए कि शब्द केवल सुनाई नहीं देते, वे अनुभव बन जाते हैं।



इसके विपरीत, कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो एक क्षण में कह दिए जाते हैं, लेकिन वर्षों तक मन से नहीं जाते । वे किसी अभिलेख का हिस्सा नहीं बनते, फिर भी स्मृतियों में दर्ज रहते हैं । तब समझ में आता है कि शब्दों का भार उनके उच्चारण में नहीं, उनके प्रभाव में होता है । कार्यालयों में अनगिनत फाइलें होती हैं । हर फाइल अपने भीतर संख्याओं की एक कहानी समेटे रहती है। लेकिन उन्हीं फाइलों के बीच हर दिन न जाने कितनी

छोटी-छोटी बातचीत भी जन्म लेती है। किसी नए कर्मचारी का संकोच, किसी सहकर्मी की उलझन, किसी वरिष्ठ का विश्वास, किसी कनिष्ठ का उत्साह। इनमें से कुछ भी किसी प्रतिवेदन का हिस्सा नहीं बनता। फिर भी वर्षों बाद यदि कुछ याद रहता है, तो अक्सर वही क्षण याद रहते हैं, जब किसी ने केवल कुछ आत्मीय शब्द कहे थे।शायद जीवन की सबसे बड़ी सच्चाइयाँ कभी दर्ज नहीं होतीं। उन्हें केवल महसूस किया जाता है।

लेखापरीक्षा हमें सिखाती है कि किसी भी निष्कर्ष पर पहुँचने से पहले हर तथ्य को समझना आवश्यक है। जीवन भी शायद यही बात कहता है। किसी व्यक्ति के बारे में राय बनाने से पहले उसकी परिस्थिति को समझ लीजिए। किसी की भूल पर प्रतिक्रिया देने से पहले उसके मन तक पहुँचने की कोशिश कीजिए। संभव है, तब हमारे शब्द थोड़े और धैर्यपूर्ण हो जाएँ, थोड़े और कोमल। कहा जाता है कि संख्याएँ कभी झूठ नहीं बोलतीं। शायद यह बात सही है। लेकिन वे कभी किसी का दुःख भी नहीं समझतीं, किसी की प्रतीक्षा नहीं करतीं और किसी के चेहरे पर मुस्कान भी नहीं ला सकतीं। यह काम शब्द करते हैं। यही कारण है कि शब्दों का मूल्य उनके अर्थ में नहीं, उनकी संवेदना में छिपा होता है।

समय के साथ बहुत कुछ बदल जाता है। पद बदलते हैं, दायित्व बदलते हैं, कार्यालय बदलते हैं। फाइलें भी एक दिन अलमारियों में सिमट जाती हैं। लेकिन कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो किसी पुराने गीत की तरह मन में जीवित रहते हैं। जब भी स्मृतियों की कोई खिड़की खुलती है, वे फिर सुनाई देने लगते हैं। तब लगता है कि जीवन भी कहीं न कहीं हमारा हिसाब रख रहा है। वह यह नहीं पूछता कि हमने कितनी फाइलें देखीं, कितने प्रतिवेदन लिखे या कितने अभिलेख जाँचे। वह शायद केवल इतना याद रखता है कि हमारे कारण कितने लोगों का मन हल्का हुआ, कितनों को सम्मान मिला और कितनों को यह विश्वास हुआ कि दुनिया में संवेदनशील लोग अब भी हैं।

शायद इसी कारण संख्याओं का हिसाब रखना हमारे दायित्व का हिस्सा है, लेकिन शब्दों का हिसाब रखना हमारे व्यक्तित्व का। क्योंकि संख्याएँ अभिलेखों में सुरक्षित रहती हैं, जबकि शब्द लोगों के हृदय में।

और शायद जीवन की सबसे सुंदर विरासत वही होती है, जिसका कोई अभिलेख नहीं होता।



सीएजी – आईसीएसएसआर संगोष्ठी (केरल अध्याय): 'केरल के वित्त की स्थिति' और 'शहरी स्थानीय निकायों में अपशिष्ट प्रबंधन'

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के सहयोग से देश भर के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में युवा विद्वानों और शोधकर्ताओं के बीच वित्तीय जवाबदेही, शासन और निमलेप रिपोर्टों की समझ को बढ़ावा देने, वित्तीय जवाबदेही की अनुसंधान-आधारित समझ और सूचित संवाद के माध्यम को बढ़ावा देने के लिए संगोष्ठी श्रृंखला का आयोजन किया गया।

महालेखाकार का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम के बारे में:

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग का नेतृत्व भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक करते हैं, जिनके कर्तव्य, शक्तियां और सेवा शर्तें मुख्य रूप से भारत के संविधान के अनुच्छेद 149 से 151 और नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (कर्तव्य, शक्तियां और सेवा शर्तें) अधिनियम, 1971 से प्राप्त होती हैं। भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था के रूप में, इसका जनादेश भारत सरकार और राज्य सरकारों की सभी प्राप्तियों और व्ययों का लेखापरीक्षण करना है, जिसमें सरकार द्वारा प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वित्त पोषित निकाय और प्राधिकरण शामिल हैं। महालेखाकारों के कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम, भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के क्षेत्रीय कार्यालय हैं।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर) के बारे में:

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएसएसआर), स्थापना 1969, देश में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान को बढ़ावा देने और समर्थन देने वाली शीर्ष संस्था है। इसका एक प्रमुख शासनादेश शुरुआती करियर के शोधकर्ताओं और विद्वानों के बीच महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर ज्ञान और जागरूकता पैदा करना है। अपनी विभिन्न योजनाओं और पहलों के माध्यम से, आईसीएसएसआर क्षमता निर्माण, उच्च गुणवत्ता वाले

अनुसंधान का निर्माण करने और राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले नवीन विचारों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह भारत में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए परियोजनाओं, फेलोशिप, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, क्षमता निर्माण, सर्वेक्षण, प्रकाशनों आदि के लिए अनुदान प्रदान करता है।

सीएजी आईसीएसएसआर–संगोष्ठी का उद्घाटन 'दिल्ली अध्याय' दिनांक 11/11/2025 को निमलेप सभागार, नई दिल्ली में आयोजित किया गया था । इसी क्रम में, सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में इन संगोष्ठियों का आयोजन किया गया । इसी श्रृंखला के तहत 'केरल अध्याय' का आयोजन दिनांक 22/06/2026 को दोपहर 02:00 बजे से शाम 05:00 बजे तक ईहॉल .एस.एम., केरल विश्वविद्यालय, कार्यवट्टम परिसर, तिरुवनंतपुरम में किया गया। इस कार्यक्रम में महालेखाकार कार्यालयों के अधिकारियों, संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं और केरल के विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया।

प्रो. धनंजय सिंह, सदस्य सचिव, आईसीएसएसआर ने स्वागत भाषण दिया और संगोष्ठी के उद्देश्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया । उन्होंने इस बात पर बल दिया कि निमलेप के साथ यह सहयोग आईसीएसएसआर को वित्तीय घटकों के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करने और शोध पत्र तैयार करने के लिए विभिन्न लेखापरीक्षा रिपोर्टों का अध्ययन करने में मदद करता है।

सुश्री प्रीति अब्राहम, महालेखाकार (लेखापरीक्षा I), केरल ने अपने प्रारंभिक वक्तव्य में निमलेप संस्था और शैक्षणिक समुदाय के बीच सहयोग के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने महालेखाकार कार्यालयों के शासनादेश का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया।

प्रो. मोहनन कुन्नुम्मल, कुलपति, केरल विश्वविद्यालय ने विशेष संबोधन दिया और कहा कि निमलेप-आईसीएसएसआर द्वारा कॉलेज के छात्रों को शामिल करने वाला यह आयोजन अपनी तरह का पहला आयोजन है। उन्होंने छात्रों को निमलेप के कार्यों से जुड़ने और उनका अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित किया।

श्री विष्णुकांत पी.बी., महालेखाकार (लेखापरीक्षा II), केरल ने इसके बाद 'राज्य वित्त लेखापरीक्षा रिपोर्ट' के आधार पर प्रथम विषय 'केरल के वित्त की स्थिति' प्रस्तुत की। उन्होंने राज्य सरकार के प्रमुख वित्तीय संकेतकों का एक व्यापक अवलोकन प्रस्तुत किया और राज्य के वित्त में सुधार के लिए सरकार के समक्ष चुनौतियों एवं अवसरों को रेखांकित किया।

प्रो. सी. वीरमणि, निदेशक, विकास अध्ययन केंद्र ने उक्त विषय पर आगे चर्चा करते हुए संकेत दिया कि राज्य की उत्पादन क्षमता को बढ़ाना होगा। उन्होंने यह भी टिप्पणी की कि यद्यपि केरल ने उल्लेखनीय सामाजिक परिणाम प्राप्त किए हैं, लेकिन इसका वित्तीय ढांचा संरचनात्मक तनाव के दौर से गुजर रहा है। उन्होंने राजस्व और व्यय दोनों पक्षों की चुनौतियों का विश्लेषण किया।

सुश्री प्रीति अब्राहम, महालेखाकार (लेखापरीक्षा I), केरल ने 2022 की निमलेप रिपोर्ट के आधार पर दूसरा विषय 'शहरी स्थानीय निकायों में अपशिष्ट प्रबंधन' प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अपशिष्ट प्रबंधन राज्य एजेंसियों, शहरी स्थानीय निकायों और अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्ताओं में फैली एक बहु-संस्थागत

जिम्मेदारी है। उन्होंने केरल राज्य में विभिन्न पहलों, जैसे—शुचित्व मिशन, हरित केरलम मिशन, क्लीन केरल मिशन और हरित कर्म सेना का उल्लेख किया।

डॉ. हरि कुरुप, निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ सर्वे एंड स्टडीज, केरल ने राज्य से संबंधित विभिन्न वित्तीय आंकड़ों पर एक प्रस्तुति दी।

सुश्री अखिला बी.एस., उप महालेखाकार, महालेखाकार कार्यालय (ले व ह), केरल ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के अलावा यूजी/पीजी और डॉक्टरेट की दो श्रेणियों में 28 राज्यों और 3 केंद्र शासित प्रदेशों में आयोजित की जाने वाली निमलेप-आईसीएसएसआर अनुसंधान लेख प्रतियोगिता की घोषणा की। उन्होंने पात्रता आवश्यकताओं, भागीदारी के तरीके और राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर की निमलेप-आईसीएसएसआर अनुसंधान लेख प्रतियोगिता के लिए क्रमशः दिनांक 01/07/2026 और दिनांक 01/08/2026 से 60 दिनों के लिए आवेदन विंडो खोले जाने के बारे में जानकारी दी । राज्य श्रेणी के लिए प्रथम विजेता को ₹75,000, द्वितीय विजेता को ₹50,000 और तृतीय विजेता को ₹25,000 की पुरस्कार राशि देने की घोषणा की गई ।

डॉ. अमर्त्य पाल, विकास अध्ययन केंद्र, तिरुवनंतपुरम ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संगोष्ठी की कुछ झलकियां:



दीप प्रज्वलित कर संगोष्ठी का शुभारंभ करते माननीय अतिथिगण



महालेखाकार से स्मृति चिह्न प्राप्त करते माननीय अतिथिगण





कार्यक्रम में भाग लेते महालेखाकारों के कार्यालयों के अधिकारी व कर्मीगण, संकाय सदस्य, शोधकर्ता और केरल के विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र ।





आज़ाद

श्री रितेश कुमार शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

अगर सच को, सच कह सको,

तो आजाद हो तुम ।

अगर सत्ता से नहीं, मातृभूमि से प्यार कर सको,

तो आजाद हो तुम ।

अगर मुफ़लिसी में भी, बड़े सपने देख सको,

तो आजाद हो तुम ।

अगर दिमाग की नहीं, दिल की सुन पा रहे हो,

तो आजाद हो तुम ।

अगर खुद के भीतर, डर और कायरता की बेड़ियाँ तोड़ सको,

तो आजाद हो तुम ।

हर कोई कीचड़ में सना है, अगर खुद को बचा पाओ,

तो आजाद हो तुम ।

जुबां तो धोखेबाज़ है, अगर दिल से बात कर पाओ,

तो आजाद हो तुम ।



अगर मौत से पहले, रोज मर नहीं रहे हो,

तो आजाद हो तुम ।

कौन हो तुम ? अगर जान पाओ,

तो आजाद हो तुम ।



नियम-आधारित से भूमिका-आधारित: योग्यताओं का व्यावहारिक प्रयोग

श्री अरविन्द आर
लेखापरीक्षक

पिछले कुछ वर्षों में सरकारी कार्यप्रणाली में एक बड़ा बदलाव आ रहा है, और यह बदलाव शासन के हर स्तर पर देखने को मिल रहा है। विशेष नीतियों की ज़रूरतों और तकनीक पर आधारित सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए यह बदलाव बहुत ज़रूरी है।

मिशन कर्मयोगी – राष्ट्रीय सिविल सेवा क्षमता निर्माण कार्यक्रम (एनपीसीएससीबी) के तहत, एफआरएसी (भूमिकाओं, गतिविधियों और योग्यताओं का ढाँचा) वह मुख्य आधार है जो सिविल सेवा को पुरानी "नियम-आधारित" प्रणाली से नई "भूमिका-आधारित" प्रणाली की ओर ले जा रहा है। आसान शब्दों में कहें तो, एफआरएसी एक डिजिटल खाका है। यह भारत सरकार के हर पद और डेस्क का नक्शा तैयार करता है, ताकि यह साफ हो सके कि उस पद की क्या ज़िम्मेदारियाँ हैं और उन्हें निभाने के लिए किन खास कौशलों की ज़रूरत है।

[भूमिका]
↓
[गतिविधि]
↓
[क्षमता]

पुराने तरीकों में कर्मचारियों की दक्षता का मूल्यांकन केवल उनकी सेवा अवधि, सामान्य नियमों और प्रक्रिया के पालन के आधार पर किया जाता था। इसके विपरीत, आधुनिक तरीका भूमिका-आधारित मापदंडों पर केंद्रित है। यहीं पर मिशन कर्मयोगी एक स्पष्ट रास्ता दिखाता है। यह बिना किसी स्पष्ट लक्ष्य के प्रशिक्षण देने के बजाय, क्षमता निर्माण योजनाओं (सीबीपी) को सीधे विशिष्ट योग्यताओं से जोड़ता है। इन योग्यताओं में मूल्य, नैतिकता और नेतृत्व से जुड़ी व्यवहार संबंधी योग्यताएँ, प्रशासनिक कार्य करने के आम कौशल वाली कार्यात्मक योग्यताएँ, और किसी विशेष क्षेत्र का ज्ञान देने वाली डोमेन योग्यताएँ शामिल हैं।

आईजीओटी कर्मयोगी (एकीकृत सरकारी ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रणाली) अधिकारियों को उनकी वर्तमान और भविष्य की तैनातियों के हिसाब से कभी भी और कहीं भी सीखने की सुविधा देता है। इसके ज़रिए अधिकारी द्वारा सीखे गए कौशलों का एक प्रमाणित डिजिटल योग्यता प्रोफ़ाइल बनता है, जिसे प्लेटफॉर्म पर कर्म पॉइंट्स के ज़रिए ट्रैक किया जाता है।

जब भी कोई अधिकारी किसी नए पद या नई भूमिका में जाता है, तो इस प्लेटफॉर्म पर मौजूद 10-15 मिनट के छोटे वीडियो मॉड्यूल उन्हें बुनियादी जानकारी दे देते हैं। इससे उन्हें नई ज़िम्मेदारी के लिए ज़रूरी कौशल तुरंत सीखने में मदद मिलती है। इस तरह, अधिकारियों के कौशल में मौजूद कमियों की पहचान की जाती है, उन्हें दर्ज किया जाता है और दूर किया जाता है। असली प्रशासनिक चुनौतियों और व्यावहारिक उदाहरणों पर आधारित ऑनलाइन कोर्स बनाकर, सामग्री प्रदाता और क्षमता निर्माण इकाइयाँ (सीबीयू) अधिकारियों को ज़मीनी स्तर पर काम करने के लिए अधिक सक्षम बना रही हैं। यह बदलाव हमारी सार्वजनिक प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक सतर्क, उत्तरदायी और भविष्य के लिए तैयार बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।





श्री अखिल पी के
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भीड़

खो जाता हूँ मैं भीड़ में हर रोज़
खो देता हूँ मेरी मंज़िल हर राह में हर रोज़।

दे नहीं पाता हूँ कभी वक्त का साथ
कमबख्त भीड़ के सागर में खो जाता हूँ हर वक्त।

ढूँढ़ नहीं पाता हूँ मैं अपने आप को कभी -
जो फंस जाता हूँ हर रोज़ भीड़ के दलदल में।

कभी पूरी नहीं हुआ शिक्षा पाने का दौड़ भी
उम्मीदवारों की भीड़ में गुम होकर।

जब भी पाते है कामयाबी मुश्किल से -
उठ आती हैं अगली समस्या हर वक्त।

खो जाते है मजबूरन यह कदम झुंड में -
निकले है जब नौकरी की खोज में हर बार।

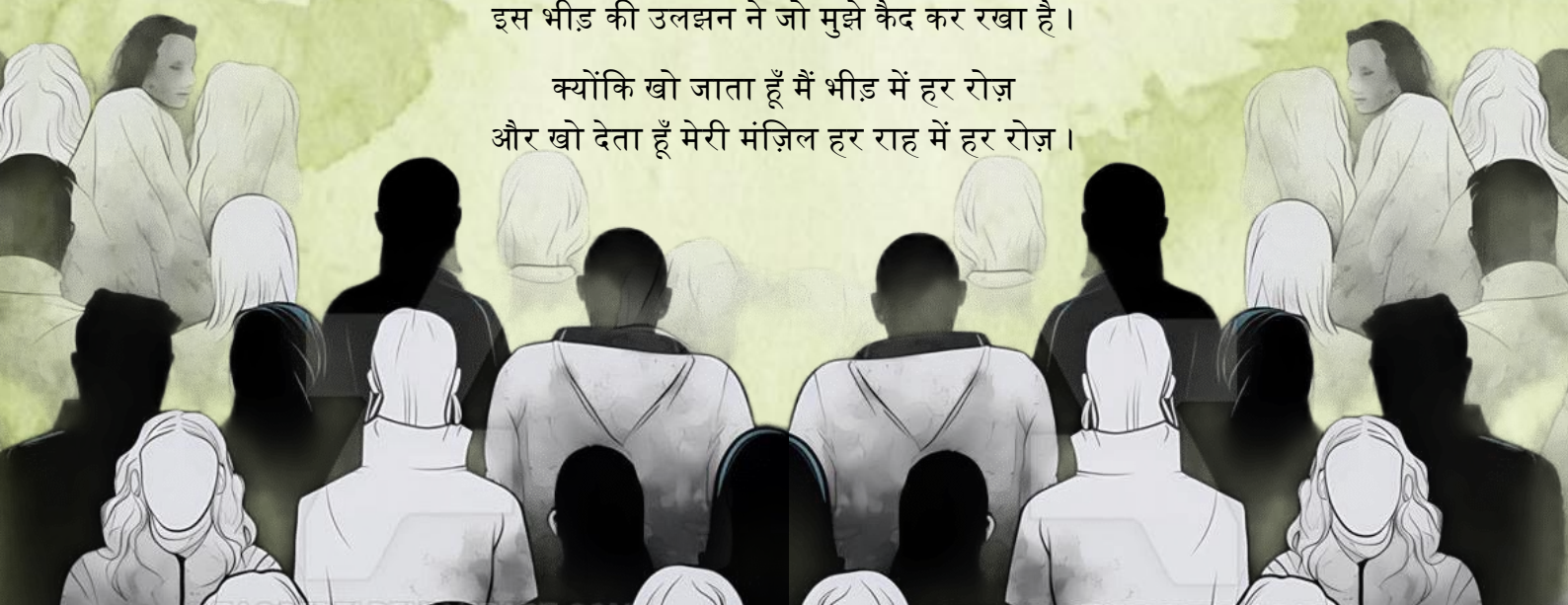
कामयाबी जब हासिल करते है भीड़ से भिड़कर
छूट जाते है पीछे हर मोड़ पर हम-कदम लाचार।

करते है हम नाकाम कोशिश हर पल
गुजरे लम्हे दिल में समाकर मुक्ति पाने।

दम घुटता है जब हलचल में हर रोज़ -
बेमौत मरता हूँ भीड़ के दलदल में।

कोई तो बताए कैसे पाउ छुटकारा
इस भीड़ की उलझन ने जो मुझे कैद कर रखा है।

क्योंकि खो जाता हूँ मैं भीड़ में हर रोज़
और खो देता हूँ मेरी मंज़िल हर राह में हर रोज़।





जंगली चमेली

सुश्री बिन्दु केशवन
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

पति का तबादला होने के बाद श्रीजा अपने परिवार के साथ नई जगह रहने आई थी।

अब तक शहर की भीड़-भाड़ और शोर-शराबे के बीच रहने वाली श्रीजा को थोड़ा अंदर आकर, शांत माहौल में बसा यह ग्रामीण मकान बहुत पसंद आया। सात साल के बेटे कन्नन को भी यह भा गया। फ्लैट और स्कूल के बीच की छोटी-सी दूरी ही अब तक उसकी दुनिया थी।

यहाँ कितनी शांति और सुकून था! पति को भी यह शांत-सुंदर घर और आसपास का माहौल बहुत पसंद आया। लेकिन श्रीजा के मन में एक शक था, कहीं यह घर बहुत अलग-थलग तो नहीं पड़ गया? नज़र पहुँचने की दूरी तक कोई पड़ोसी नहीं दिखते थे।

पति बार-बार कह रहे थे कि डरने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। श्रीजा को भी लगा कि बात तो सही है।

ऊँचे बाउंड्री वॉल और गेट, फिर कंकड़ बिछे आँगन के किनारों पर खिले हुए सफेद और नारंगी अप्रैल लिली के फूल। आँगन के कोने में कणिंकोन्ना (अमलतास) की कलियाँ खिलने लगी थीं। दिन भर भरपूर धूप, ताज़ी हवा और किसी पक्षी की चहचहाहट बनी रहती।

दीवार के उस पार झाड़ियों से ढके हुए वीरान खेत थे। फिर भी श्रीजा और कन्नन को वह जगह बहुत भा गई।

कन्नन की गर्मी की छुट्टियाँ भी शुरू हो चुकी थीं। इसलिए पति के ऑफिस जाने के बाद भी घर में रौनक रहती।

दोपहर के बाद छोटे-मोटे कामों में मदद करने के लिए तुलसी आती थी। पति के दोस्त ने ही तुलसी का इंतज़ाम किया था। स्कूल की छुट्टियाँ होने के कारण अक्सर तुलसी के साथ उसकी बेटी चिन्नू भी आ जाती।

कन्नन को भी चिन्नू का साथ पाकर बहुत खुशी होती; दोनों हमउम्र जो थे। उनके आते ही पूरा घर आवाज़ों और चहल-पहल से भर जाता।

जिन दिनों चिन्नू आती, वह पत्तों के एक बड़े से दोने में चमेली की कलियाँ भरकर लाती। उसे चमेली की माला गूँथना बहुत अच्छी तरह आता था। वह चमेली की माला बनाकर श्रीजा के बालों में सजा देती और मुस्कुराती। उसकी मुस्कान कितनी प्यारी थी!

श्रीजा और कन्नन दोपहर का खाना खाकर चिन्नू और तुलसी का इंतज़ार कर रहे थे। दोपहर के तीन बज चुके थे। 'शायद आज वे नहीं जाएँगी,' श्रीजा ने मन में सोचा। कन्नन ने कहा कि उसे नींद आ रही है और वह सो गया। कन्नन के पास लेटकर श्रीजा की भी आँख लग गई।

चिन्नू की "मामी" पुकार सुनकर श्रीजा की नींद खुली।

"आज माँ नहीं आई क्या?"

"माँ आ रही है। मामी, मैं आपको एक चीज़ दिखाती हूँ! हमारे यहाँ आने वाले रास्ते के पास वाले खेत में खूब सारी चमेली की कलियाँ खिली हैं। चलो, दोनों मिलकर तोड़ते हैं।"

"कन्नन सो रहा है, वह अकेला है न?"

"कोई बात नहीं मामी! मेरी माँ अभी पहुँचने ही वाली है," उसने दूर इशारा करते हुए कहा।

बात सही थी, तुलसी दूर से पैदल चलकर आ रही थी।

गेट भिड़ाकर चिन्नू के साथ बाहर निकलते ही जैसे एक ठंडी हवा ने उन्हें घेर लिया। जब वह उसके दिखाए तंग रास्ते पर आगे बढ़ी, तो श्रीजा को लगा कि क्या उसे यहाँ आना चाहिए था? काँटों भरी झाड़ियों से भरा रास्ता था।

दोपहर के 3 ही बजे थे, लेकिन सब कुछ धुँधला सा था—जैसे वे किसी घने कोहरे में फँस गए हों।

वह रास्ता एक बड़े से खेत में जाकर खत्म होता था, जहाँ ढेरों छोटे-छोटे पेड़ उगे हुए थे। वहाँ खपरैल की छत वाला एक छोटा-सा घर भी था, जहाँ कोई रहता हुआ नहीं लग रहा था। बेलों और झाड़ियों ने उस घर को लगभग तीन-चौथाई ढक लिया था, जिसके बीच से बंद पड़ा मुख्य दरवाज़ा दिख रहा था।

चिन्नू उस खेत में यहाँ-वहाँ दौड़ रही थी। सचमुच, जैसा उसने कहा था, उस पूरे खेत में चमेली की बेलें फैली हुई थीं और उन पर ढेरों कलियाँ आई हुई थीं।

चिन्नू चमेली की कलियाँ तोड़-तोड़कर अपने हाथ में पकड़े लिफाफे में डाल रही थी।

'इसके हाथ में यह लिफाफा कब आया? पहले तो नहीं देखा था,' श्रीजा ने मन में सोचा।

अचानक श्रीजा का मन हुआ कि वहाँ से तुरंत निकल चलें। उसने जल्दी-जल्दी कलियाँ तोड़ना बंद किया और पीछे मुड़कर देखा तो चिन्नू गायब थी।

उसने ज़ोर से आवाज़ लगाई—"चिन्नू!" लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। कोहरे की घनी चादर ने सब कुछ ढक लिया था और आगे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। अचानक ऐसा लगा जैसे शाम हो गई हो और हल्का अँधेरा छा गया हो।

उसने फिर ज़ोर से पुकारा—"चिन्नू!"

कोहरे के उस पार चिन्नू मुस्कुराती हुई खड़ी थी।

"आइए मामी, हम उधर चलते हैं," खपरैल वाले घर की ओर उंगली से इशारा करते हुए उसने कहा—"वह मेरा घर है।"

चिन्नू फिर मुस्कुराई, लेकिन इस बार उसकी आँखों में एक अजीब, जंगली चमक थी।

श्रीजा को लगा जैसे डर का एक भयानक साया उस पर छा गया हो।

श्रीजा पीछे मुड़कर भागी। भागते-भागते वह किसी चीज़ से टकराकर गिरने ही वाली थी, लेकिन एक पेड़ से टकराकर रुक गई। उसके बाएँ माथे पर ज़ोर से चोट लगी और तेज़ दर्द होने लगा। उस दर्द की परवाह किए बिना उसने अपनी पूरी ताकत समेटी और घर की तरफ भागी।

काँटों से पैर छिल रहे थे, पर उसे इसका अहसास तक नहीं था। उस वक्त उसके दिमाग में सिर्फ एक ही बात थी, जितनी जल्दी हो सके कन्नन के पास पहुँचना।

श्रीजा हड़बड़ाकर नींद से उठ बैठी। वह पूरी तरह पसीने में भीगी हुई थी। तो क्या इतने समय से वह सपना देख रही थी? कन्नन बगल में ही चैन से सो रहा था।

उसे बहुत प्यास लग रही थी। उसने जग से पानी उड़ेलकर पिया। जैसे ही उसने गिलास वापस रखा, उसकी नज़र टेबल पर पड़ी—सपने में उसने चिन्नू के हाथ में जो लिफाफा देखा था, वही लिफाफा चमेली की कलियों से भरा हुआ टेबल पर रखा था!

बड़े से दीवार वाले शीशे में खुद को देखते ही वह सन्न रह गई। बाएँ माथे पर चोट का उभरा हुआ निशान था, जैसे वह कहीं टकराई हो। उसके दोनों पैर काँटों से छिले हुए थे।

तभी गेट खुलने की आवाज़ सुनाई दी। सत्य और भ्रम के बीच उलझी, थर-थर काँपती हुई वह वहीं खड़ी रह गई। खिड़की से बाहर देखा तो चिन्नू और उसकी माँ चली आ रही थीं। उन्हें देखकर श्रीजा के जान में जान आई।

माथे पर चोट का उभार देखकर तुलसी ने कुछ पूछा। श्रीजा ने कोई साफ जवाब नहीं दिया, इसलिए तुलसी अपने काम में लग गई।

अपनी माँ के साथ रसोई की तरफ जाने के लिए चिन्नू ने दो कदम बढ़ाए, फिर रुककर वापस मुड़ी।

वह सीधे श्रीजा के सामने आई और बोली- "जब मैंने पीछे से आवाज़ दी, तो आप रुकी क्यों नहीं, मामी? क्यों भाग रही थीं? मैं तो आपको अपने घर ही ले जा रही थी न... इसीलिए तो आपके सिर पर चोट लग गई!"

चिन्नू अब भी मुस्कुरा रही थी... और उसकी आँखों में वही अजीब, भयानक चमक तैर रही थी।





भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायक

श्री आदिशंकर एस एस
पुत्र संध्या पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

भारत का स्वतंत्रता संग्राम विश्व के सबसे लंबे और प्रेरणादायक स्वतंत्रता आंदोलनों में से एक था। यद्यपि महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह और जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं को व्यापक रूप से याद किया जाता है, लेकिन ऐसे असंख्य वीर पुरुष और महिलाएँ भी थीं जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, फिर भी उन्हें वह पहचान नहीं मिल सकी जिसकी वे हकदार थीं। इन गुमनाम नायकों ने अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प और देशभक्ति के साथ ब्रिटिश शासन का मुकाबला किया। उनके योगदान ने भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1. मातंगिनी हाजरा (1870–1942)



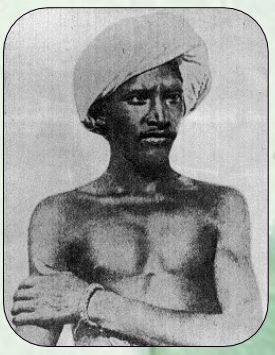
मातंगिनी हाजरा पश्चिम बंगाल की एक निर्भीक स्वतंत्रता सेनानी थीं। उन्होंने सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। लगभग सत्तर वर्ष की आयु में भी वे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जुलूसों का नेतृत्व करती थीं। वर्ष 1942 में एक प्रदर्शन के दौरान ब्रिटिश पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियाँ चलाईं। कई गोलियाँ लगने के बावजूद वे हाथ में तिरंगा थामे "वंदे मातरम्" का नारा लगाती हुई आगे बढ़ती रहीं और अंततः वीरगति को प्राप्त हुईं। उनका साहस आज भी देशभक्ति और त्याग का प्रतीक माना जाता है।

2. अल्लूरी सीताराम राजू (1897–1924)



अल्लूरी सीताराम राजू आंध्र प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों के महान क्रांतिकारी नेता थे। उन्होंने 1922 से 1924 के बीच ब्रिटिश सरकार की दमनकारी वन नीतियों के विरुद्ध प्रसिद्ध राम्पा विद्रोह का नेतृत्व किया। उन्होंने गुरिल्ला युद्ध की रणनीति अपनाकर अंग्रेज़ों को लंबे समय तक चुनौती दी। अंततः वे अंग्रेज़ों द्वारा पकड़ लिए गए और 1924 में उन्हें फाँसी दे दी गई। आज भी वे आदिवासी समाज के महानायक के रूप में सम्मानित हैं।

3. बिरसा मुंडा (1875–1900)



बिरसा मुंडा छोटानागपुर पठार की मुंडा जनजाति के महान आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी, धार्मिक नेता और लोकनायक थे। उन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के शोषण और अन्याय के विरुद्ध "उलगुलान" (महाविद्रोह) नामक ऐतिहासिक आंदोलन का नेतृत्व किया। अपने अद्वितीय साहस, दूरदर्शी नेतृत्व और सामाजिक सुधारों के माध्यम से उन्होंने आदिवासी समाज को संगठित किया तथा उनमें अपने अधिकारों, संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा के लिए संघर्ष करने की चेतना जगाई। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और

प्रेरणादायक है। आज भी बिरसा मुंडा को आदिवासी अस्मिता, सामाजिक न्याय, स्वाभिमान और प्रतिरोध के अमर प्रतीक के रूप में श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है।

4. पीर अली ख़ान (1812–1857)



पीर अली ख़ान 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रारंभिक क्रांतिकारियों में से एक थे। वे पटना के एक पुस्तक विक्रेता थे और गुप्त रूप से क्रांतिकारियों के बीच संदेश पहुँचाने तथा संगठन बनाने का कार्य करते थे। अंग्रेज़ों द्वारा गिरफ्तार किए जाने के बाद उन्हें कठोर यातनाएँ दी गईं, लेकिन उन्होंने अपने साथियों के नाम बताने से इंकार कर दिया। अंततः उन्हें फाँसी दे दी गई। वे भारत के प्रारंभिक स्वतंत्रता संग्राम के अमर शहीदों में गिने जाते हैं।

5. वेलु नचियार (1730–1796)



वेलु नचियार तमिलनाडु के शिवगंगा राज्य की वीर रानी थीं। उन्हें ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध युद्ध छेड़ने वाली भारत की पहली महिला शासकों में से एक माना जाता है। अपने पति की मृत्यु के बाद उन्होंने सेना का पुनर्गठन किया, विभिन्न शक्तियों से गठबंधन किया और सफलतापूर्वक अपना राज्य वापस प्राप्त किया। उनकी सेनापति कुइली ने ब्रिटिश गोला-बारूद भंडार पर आत्मबलिदानी हमला किया, जिसे इतिहास के प्रारंभिक आत्मघाती सैन्य अभियानों में से एक माना जाता है। वेलु नचियार का नेतृत्व, साहस और रणनीतिक कौशल आज भी प्रेरणादायक है।

6. कनकलता बरुआ (1924–1942)



कनकलता बरुआ असम की एक युवा स्वतंत्रता सेनानी थीं। केवल सत्रह वर्ष की आयु में उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया। वे तिरंगा लेकर एक पुलिस थाने पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के लिए निकलीं। अंग्रेज़ अधिकारियों की चेतावनी के बावजूद वे आगे बढ़ती रहीं। ब्रिटिश पुलिस की गोली लगने पर भी उन्होंने तिरंगे को झुकने नहीं दिया। उनका बलिदान देश के युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन गया।

इन गुमनाम स्वतंत्रता सेनानियों का बलिदान हमें यह याद दिलाता है कि भारत की आज़ादी केवल कुछ प्रसिद्ध नेताओं के प्रयासों का परिणाम नहीं थी, बल्कि देश के हर क्षेत्र, हर समुदाय और हर वर्ग के लोगों ने इसमें अपना योगदान दिया था। उन्होंने साहस, निस्वार्थ सेवा और राष्ट्रप्रेम का सर्वोच्च उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके योगदान को स्मरण करना हमें स्वतंत्रता के वास्तविक मूल्य का एहसास कराता है और नई पीढ़ी को देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करने की प्रेरणा देता है।

भारत की स्वतंत्रता हजारों ज्ञात और अज्ञात वीरों के त्याग और बलिदान का परिणाम है। मातंगिनी हाजरा, अल्लूरी सीताराम राजू, बिरसा मुंडा, पीर अली ख़ान, वेलु नचियार और कनकलता बरुआ ऐसे ही पाँच महान गुमनाम नायक हैं, जिनके साहस और देशभक्ति ने स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा दी। उनके जीवन से हमें यह सीख मिलती है कि सच्चा राष्ट्रप्रेम निस्वार्थ सेवा, साहस और समर्पण में निहित होता है। इन महान विभूतियों को याद करना और उनके आदर्शों का अनुसरण करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है।

योग दिवस





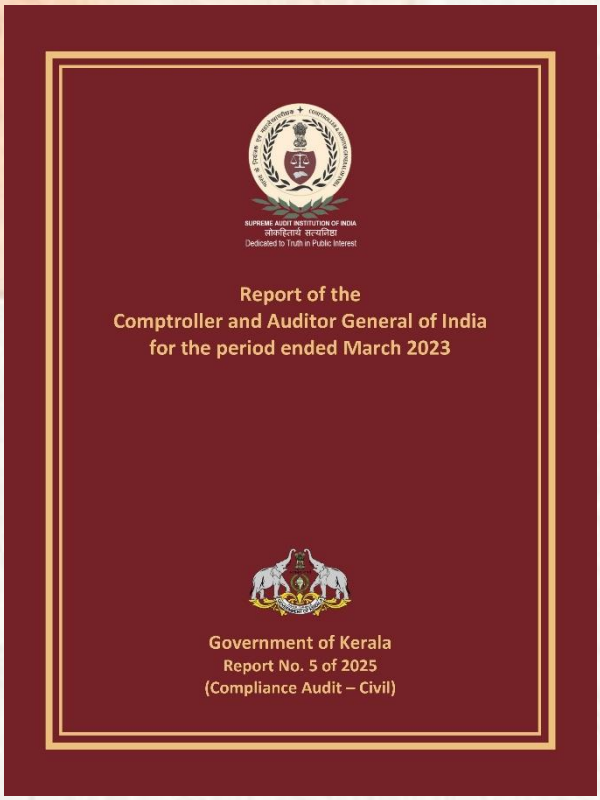




मार्च 2023 को समाप्त अवधि के लिए भा.नि.म.ले.प. की रिपोर्ट

केरल सरकार, वर्ष 2025 की रिपोर्ट सं 05 (अनुपालन लेखापरीक्षा – सिविल)

विहंगम दृष्टि



भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की इस रिपोर्ट में दो विषय-विशिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा पैरा और तीन अनुपालन लेखापरीक्षा पैरा शामिल हैं, जिनमें संहिताबद्ध प्रावधानों का पालन न करने, पर्यवेक्षी नियंत्रण के अभाव, निष्क्रिय निवेश, निष्फल व्यय आदि के मामले शामिल हैं, जिनमें ₹22.94 करोड़ की राशि अंतर्निहित है । प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्ष नीचे दिए गए हैं।

विषय-विशिष्ट अनुपालन लेखापरीक्षा

एकीकृत बाल संरक्षण योजना एवं अन्य बाल संरक्षण योजनाओं का कार्यान्वयन

एकीकृत बाल संरक्षण योजना वर्ष 2009-10 में महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के तहत एक केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में शुरू की गई थी, जिसका उद्देश्य बच्चों को संस्थागत, पारिवारिक और समुदाय-आधारित देखभाल प्रदान करना तथा उन्हें भेद्यता, जोखिम और दुर्व्यवहार की स्थितियों से बचाने के लिए निवारक उपायों को बढ़ावा देना, बाल अधिकारों पर जनता को शिक्षित करना आदि था। एकीकृत बाल संरक्षण योजना के अंतर्गत किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015 (अधिनियम) के कार्यान्वयन के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है।

लेखापरीक्षा में पाया गया कि राज्य ने बालकों की देखरेख और संरक्षण के लिए योजना के कार्यान्वयन को सुव्यवस्थित करने हेतु नियमों का निर्माण नहीं किया है, जो अधिनियम के उद्देश्यों को पूरा करने के लिए नियम बनाने के अधिनियमीय शर्त का उल्लंघन है। मार्च 2023 तक, पांच चयनित जिलों में 165 बाल देखभाल संस्थानों के पंजीकरण का नवीनीकरण नहीं किया गया था। लेखापरीक्षा में देखा गया कि नवीनीकरण की आवश्यकता वाले अधिकांश मामलों में, जिला बाल संरक्षण इकाई के स्तर पर जिला मजिस्ट्रेटों को आवेदन भेजने में विलंब हुई, जिसके परिणामस्वरूप जिला मजिस्ट्रेटों द्वारा निरीक्षण करने में विलंब हुआ। सीसीआई की ग्रेडिंग आज तक (फरवरी 2024) आयोजित नहीं की गई थी। किशोर न्याय बोर्डों और बाल कल्याण समितियों को सामाजिक जांच रिपोर्ट प्रस्तुत करने में क्रमशः 364 और 447 दिनों का विलंब हुआ। चूंकि सामाजिक जांच रिपोर्ट किशोर न्याय बोर्ड / बाल कल्याण समिति की निर्णय प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, अतः इनकी तैयारी में विलंब से बच्चे के लिए प्रतिकूल परिणाम हो सकते हैं।

चयनित 17 सीसीआई में से किसी ने भी नियमों में दिए गए प्रावधानों के अनुसार व्यक्तिगत देखभाल योजनाओं को अद्यतन नहीं किया। लेखापरीक्षा में देखा गया कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों / मानसिक रूप से दिव्यांग बच्चों को ऐसे संस्थानों में रखा गया था जहाँ इन बच्चों के लिए निर्धारित मानक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थीं। तिरुवनंतपुरम, एर्नाकुलम और वयनाड में जांच की गई सीसीआई में से किसी के पास भी नशीली दवाओं, पदार्थों और शराब के सेवन से नशामुक्त होने की आवश्यकता वाले बच्चों को विशेष देखभाल और उपचार प्रदान करने की व्यवस्था नहीं थी। इसके अतिरिक्त, मानसिक बीमारी से पीड़ित बच्चों के संरक्षण/उपचार/पुनर्वास के लिए कोई विशेष गृह तिरुवनंतपुरम, एर्नाकुलम और वयनाड में नहीं थे, जिसके कारण नशे के आदी बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ ठहराना पड़ा, जो एक वांछनीय कार्यप्रणाली नहीं थी। चयनित जिलों में, आउटरीच कार्यकर्ताओं ने आईसीपीएस निर्धारित दिशानिर्देशों के अनुसार पोषित परिवारों का दौरा नहीं किया था। सीसीआई से बच्चों की लंबी अवधि की अनुपस्थिति के मामले सामने आए, जिनके प्रवास को बच्चों की भलाई और सुरक्षा सुनिश्चित किए बिना रिहाई आदेश जारी करके समाप्त कर दिया गया था। इन बच्चों की संवेदनशील परिस्थितियों को देखते हुए, अत्यधिक प्रवास की अवधि के दौरान होने वाली किसी भी अप्रिय घटना की स्थिति में, बच्चे की सुरक्षा के संबंध में सीसीआई / सीडब्ल्यूसी / जेजेबी / सरकार कानूनी रूप से असहज स्थिति में आ सकती थी। चयनित जिलों में, गोद लेने के इच्छुक माता-पिता के विवरण वाली 'होम स्टडी रिपोर्ट्स' समय पर तैयार और अपलोड नहीं की गईं।

लेखापरीक्षा में यह पाया गया कि राज्य में संचालित 14 विशिष्ट दत्तक-ग्रहण अभिकरणों (एस.ए.ए.) में से केवल दो अभिकरणों में ही परित्यक्त बच्चों को प्राप्त करने हेतु क्रैडल पॉइंट्स स्थापित किए गए थे। तिरुवनंतपुरम और एर्नाकुलम जिलों में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संबंध में जिला चिकित्सा अधिकारी द्वारा परीक्षण में 49 से 275 दिनों का विलंब हुआ, जिससे बच्चे को कानूनी रूप से गोद लेने के लिए मुक्त घोषित करने में बाधा उत्पन्न हुई। जांच किए गए जिलों में दत्तक ग्रहण के बाद के अनुवर्ती कार्यों के संचालन में लेखापरीक्षा ने विलंब पाया। निर्धारित अनुसार दत्तक ग्रहण के बाद अनुवर्ती कार्रवाई न किए जाने के कारण, आवधिक आधार पर यह आकलन नहीं किया जा सका कि गोद लिए गए बच्चे को दत्तक माता-पिता के साथ समायोजन संबंधी समस्याएं हो रही हैं या नहीं। विशिष्ट दत्तक-ग्रहण अभिकरण तिरुवनंतपुरम में यह देखा गया कि दत्तक-ग्रहण शुल्क की ₹16.91 लाख की राशि का व्यय-विचलन वेतन मद के व्यय को पूरा करने हेतु किया गया था।

लेखापरीक्षा ने विधि का उल्लंघन करने वाले किशोरों से संबंधित जांच प्रक्रिया को पूरा करने में विलंब देखी, जिसके परिणामस्वरूप जेजेबी द्वारा निपटाए जाने वाले मामलों में लंबितता बढ़ी। जेजेबी द्वारा जांच प्रक्रिया पूरी करने में हुई विलंब से विधि का उल्लंघन करने वाले किशोर द्वारा सही जाने वाली परीक्षण अवधि में अवांछित वृद्धि होगी, जो बच्चे के गरिमापूर्ण जीवन के अधिकार के दृष्टिगत स्वीकार्य नहीं है। बाल श्रम, बाल भिक्षावृत्ति और बाल तस्करी में लिप्त बच्चों को बचाने के लिए, जिला बाल संरक्षण अधिकारियों को (सितंबर 2020) में सप्ताह में कम से कम तीन बार बचाव अभियान चलाने के निर्देश दिए गए थे । हालांकि, चयनित जिलों में, चलाए गए बचाव अभियानों की संख्या 2021 से 2023 के दौरान 156 के लक्षित आंकड़े से काफी कम थी। चार बच्चों को केंद्र और राज्य दोनों की प्रायोजकता वितरित की गई, जो केंद्रीय/राज्य प्रायोजकता दिशानिर्देशों का उल्लंघन था। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विकास विभाग से पूर्व में ही वित्तीय

सहायता प्राप्त कर रहे अनुसूचित जाति के 56 एवं अनुसूचित जनजाति के छह विद्यार्थियों को राज्य प्रायोजन का भुगतान किए जाने के फलस्वरूप ₹20.78 लाख की वित्तीय सहायता का अपात्र भुगतान हुआ।

लेखापरीक्षा ने देखा कि चयनित 17 सीसीआई में, 340 निरीक्षणों की निर्धारित संख्या के मुकाबले, राज्य निरीक्षण समिति ने लेखापरीक्षा अवधि के दौरान केवल छह निरीक्षण किए, जो कि मात्र दो प्रतिशत था। इसके अतिरिक्त, सीडब्ल्यूसी ने 2018-19 से 2022-23 की अवधि के दौरान एर्नाकुलम में बच्चों के लिए आवासीय सुविधाओं का कोई निरीक्षण नहीं किया था, जबकि वायनाड में, 2018-19 से 2020-21 के दौरान निरीक्षणों की संख्या सात से 15 के बीच थी। सीडब्ल्यूसी द्वारा निरीक्षण न करने से सीसीआई में सेवाओं की गुणवत्ता में संभावित सुधारों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। सीडिट द्वारा विकसित बाल- संरक्षण प्रबंधन सूचना प्रणाली, मार्च 2024 तक भी कार्यात्मक नहीं बनाई जा सकी जिसके लिए ₹2.67 लाख का भुगतान किया गया था।

अनुशंसाएं :

• जेजेबी और सीडब्ल्यूसी के पास पहुंचने वाले बच्चों और परिवारों के लिए पर्याप्त बुनियादी सुविधाएं प्रदान की जाए।

• सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पर्याप्त सुविधाओं के साथ सुरक्षित प्रवास प्रदान किया जाए।

• सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि मानसिक बीमारी से पीड़ित बच्चों और नशीली दवाओं, शराब आदि से नशामुक्त होने की आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ सह-आवास की अनुमति न दी जाए।

• सीडब्ल्यूसी को सीसीआई का नियमित दौरा करना चाहिए और यह सुनिश्चित करने के लिए प्रभावी अनुवर्ती कार्रवाई की सुविधा प्रदान करनी चाहिए कि पोषित देखभाल में रहने वाले बच्चे एक सुरक्षित और आरामदायक जीवन जीएं।

• नियमों के तहत यथा निर्धारित क्रैडल बेबी पॉइंट्स शिशुओं के सुरक्षित परित्याग के लिए स्थापित किए जाने चाहिए।

• विभाग को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आईसीपीएस से प्रायोजकता प्राप्त करने वाले बच्चों को अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विकास विभाग से वित्तीय सहायता प्राप्त न हो रही हो।

(पैराग्राफ 2.1)

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान का कार्यान्वयन

राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान सितंबर 2013 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एम एच आर डी) द्वारा शुरू की गई एक केंद्र प्रायोजित योजना है, जिसे XII और XIII पंचवर्षीय योजना अवधियों में संचालित किया जाना था। राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान का मुख्य उद्देश्य समग्र रूप से उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिए योजना

बनाने, उन्हें लागू करने और उनकी निगरानी करने के लिए पर्याप्त क्षमताओं को विकसित करने हेतु राज्यों को सक्षम और सशक्त बनाना था। इस योजना को दो चरणों में लागू किया जाना था अर्थात् 2013-17 की अवधि के दौरान रुसा 1.0 और 2018-22 के दौरान रुसा 2.0 ।

केरल उच्च शिक्षा अधिनियम, 2007 में राज्य द्वारा रुसा दिशानिर्देशों (सितंबर 2013) को ध्यान में रखते हुए केवल जुलाई 2018 में, पांच साल के अंतराल के बाद संशोधन किया गया था। लेखापरीक्षा में पाया गया कि संशोधित अधिनियम के कुछ प्रावधान रुसा दिशानिर्देशों में उल्लिखित प्रावधानों के अनुरूप नहीं थे। उदाहरण के लिए, रुसा दिशानिर्देशों के अनुसार, परिषद का अध्यक्ष एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद/सार्वजनिक बुद्धिजीवी होना चाहिए, जिसमें सिद्ध नेतृत्व गुण हों। हालांकि, संशोधित अधिनियम में राज्य के उच्च शिक्षा मंत्री को परिषद का अध्यक्ष बनाने जाने का प्रावधान किया गया था।

राज्य उच्चतर शिक्षा योजना की तैयारी में विलंब हुई। उच्च शिक्षा में पहुंच, समानता और उत्कृष्टता के संदर्भ में महत्वपूर्ण आवश्यकताओं का विश्लेषण करने के लिए राज्य उच्चतर शिक्षा योजना के निर्माण से पहले किया जाने वाला आधारभूत सर्वेक्षण नहीं किया गया था। सात चयनित संस्थानों द्वारा अंतिम विस्तृत परियोजना रिपोर्ट प्रस्तुत करने में 347 दिनों से लेकर 4½ वर्ष तक का विलंब हुआ। योजना के दायरे को सरकारी संस्थानों तक सीमित करने के केरल सरकार के फैसले ने एनएएसी मान्यता प्राप्त 166 सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेजों को रुसा 1.0 के अंतर्गत विचार किए जाने से प्रतिबंधित कर दिया। सरकार ने रुसा निधियों के प्रबंधन से केरल राज्य उच्च शिक्षा परिषद की भूमिका को कम कर दिया, जिससे रुसा दिशानिर्देशों के प्रावधानों से विचलन हुआ। राज्य परियोजना निदेशक को राज्य के हिस्से के आवंटन में 19 से 395 दिनों का विलंब हुआ।

राज्य द्वारा परियोजना अनुमोदन बोर्ड को भौतिक निरीक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत करने में विलंब के परिणामस्वरूप संस्थानों को राज्य और केंद्र के अंश की अंतिम किश्त जारी नहीं की जा सकी। लेखापरीक्षा में पाया गया कि 2018-23 के दौरान उच्च शिक्षा पर वास्तविक व्यय राज्य के जीएसडीपी का 0.44 प्रतिशत से 0.51 प्रतिशत तक रहा। केरल सरकार ने योजना के अंतर्गत परिकल्पित अनुसार उच्च शिक्षा क्षेत्र में व्यय में वृद्धि नहीं की।

मूल विस्तृत परियोजना रिपोर्ट की स्वीकृति के तीन साल बाद भी, सरकारी कॉलेज, तृप्पूणित्तरा निष्पादित की जाने वाली परियोजना पर निर्णय लेने में असमर्थ था और कई विकल्पों की तलाश की जा रही थी। परिणामस्वरूप, आवंटित धनराशि का उपयोग नहीं हो सका। राज्य परियोजना निदेशक ने 31 स्थानों पर वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग सुविधा के एकीकरण को पूरा करना सुनिश्चित किए बिना केल्ट्रॉन को पूर्ण भुगतान कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप ₹1.24 करोड़ का निष्फल व्यय हुआ। वयनाड में न्यू मॉडल डिग्री कॉलेज के निर्माण की परियोजना को जुलाई 2018 में मंजूरी दी गई थी, जो कि फरवरी 2024 तक शुरू होना भी बाकी थी, अर्थात् पांच साल से अधिक समय बीत जाने के बाद भी। संस्थानों ने ऐसी परियोजनाएं शुरू कीं जो मूल डीपीआर में शामिल नहीं थीं और निष्पादन के लिए तकनीकी स्वीकृति प्राप्त नहीं थी। इसके अतिरिक्त, कन्नूर विश्वविद्यालय में सेमिनार कॉम्प्लेक्स से संबंधित कार्य हेतु, विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद ने योजना के दिशानिर्देशों की उपेक्षा करते हुए, ठेकेदार को अत्यधिक लामबंदी अग्रिम स्वीकृत करने के साथ-साथ एक वर्ष का अनुचित विस्तार देकर अनुचित लाभ पहुंचाया। हालांकि, रुसा निधियों से ₹5.13 करोड़ के व्यय के उपरांत भी, ठेकेदार ने जून 2019 से लगभग पांच साल बीत जाने के बाद भी काम पूरा नहीं किया था। इसके अतिरिक्त, कन्नूर विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक उपकरण केंद्र पांच साल बीत जाने के बाद भी कार्यात्मक नहीं बनाया गया था और केंद्र में स्थापना के लिए ₹2.20 करोड़ में खरीदे गए चार उपकरणों को निस्तारण हेतु विश्वविद्यालय

के विभिन्न परिसरों में विभागाध्यक्षों के व्ययनाधीन रखना पड़ा। श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कालडी में सभागार का निर्माण कोष जारी होने के पांच साल बीत जाने के बाद भी पूरा नहीं हुआ था।

रुसा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि पहुंच, समानता और गुणवत्ता के मुद्दों को न्यायसंगत तरीके से संबोधित किया जाए। मौजूदा भवन को पूरी तरह से दिव्यांगों के अनुकूल और बाधा मुक्त वातावरण में परिवर्तित करने जैसे समानता के मुद्दों को संबोधित करके, वंचित और उपेक्षित वर्गों के छात्रों के नामांकन में महत्वपूर्ण प्रभाव की उम्मीद थी। हालांकि, 16 जांच किए गए संस्थानों में से केवल चार ने ₹239 लाख के लिए दिव्यांग अनुकूल सुविधाएं प्रदान करने के प्रस्ताव शामिल किए थे। इस प्रकार, रुसा के तहत घटकों का चयन करते समय संस्थानों द्वारा दिव्यांग अनुकूल सुविधाओं की स्थापना को कम प्राथमिकता दी जा रही थी।

चयनित संस्थानों में गवर्नर्स बोर्ड और प्रोजेक्ट मॉनिटरिंग यूनिट्स का गठन न होना यह दर्शाता है कि संस्थागत परियोजनाओं के कार्यान्वयन के संबंध में समय पर समीक्षा और निर्णय लेने को कम प्राथमिकता दी गई थी। जनवरी 2024 में रुसा वेबसाइट में भौगोलिक सूचना प्रणाली के लेखापरीक्षा विश्लेषण से पता चला कि वित्त पोषित 157 संस्थानों में से केवल 19 ने परियोजना कार्यान्वयन की स्थिति पर अपनी जानकारी को जियो-टैग किया था। यह इस बात का संकेत था कि राज्य में वेब-आधारित निगरानी प्रणाली की संभावनाओं का प्रभावी ढंग से दोहन नहीं किया गया था। 2018-23 के दौरान 15 चयनित संस्थानों में नियुक्त अतिथि/अनुबंध शिक्षकों की संख्या यूजीसी मानदंडों में निर्दिष्ट 10 प्रतिशत के मानदंड के मुकाबले 42 से 47 प्रतिशत तक थी। रुसा 1.0 की पूर्व-आवश्यकताएं और रुसा 2.0 के लक्ष्य राज्य द्वारा पूर्ण रुप से प्राप्त नहीं किए गए थे।

अनुशंसाएं: सरकार द्वारा यह सुनिश्चित किया जाए कि

• वेब-आधारित निगरानी प्रणाली के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए किए गए सभी कार्यों को जियो-टैग किया गया हो।

• भारत सरकार के साथ समझौता ज्ञापन के अनुसार उच्च शिक्षा पर व्यय को जीएसडीपी के दो प्रतिशत तक बढ़ाया जाए।

• संस्थानों के सुचारू संचालन के लिए शैक्षणिक पदों हेतु कर्मचारियों की भर्ती मानदंडों के अनुसार की जाए।

• लक्षित लाभों की प्राप्ति हेतु रुसा के अंतर्गत परियोजनाओं को समयबद्ध तरीके से पूर्ण किया जाना चाहिए और अत्यधिक विलंबित मामलों के लिए उत्तरदायी अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई करने के विकल्प पर विचार किया जाना चाहिए।

(पैराग्राफ 3.1)

लेखापरीक्षा में ऐसे मामले देखे गए जहां समुदाय के लाभ के लिए सार्वजनिक संपत्ति बनाने हेतु केरल सरकार द्वारा जारी की गई धनराशि प्रशासनिक देखरेख और विभिन्न स्तरों पर ठोस कार्रवाई की कमी के कारण सरकारी धन के गबन, भवनों पर निष्फल व्यय, निष्पादित न होने वाले निवेश आदि के कारण अप्रयुक्त/अवरुद्ध रही। विवरण नीचे दिए गए हैं।

गबन

संहिताबद्ध प्रावधानों का पालन न करने और पर्यवेक्षी नियंत्रणों के अभाव के परिणामस्वरूप नारियल नर्सरी, वलियतुरा, तिरुवनंतपुरम में ₹1.28 लाख का गबन हुआ।

रोकड़ बही में प्रविष्टियों को दर्ज करने और उपयुक्त लेखा शीर्षों में त्वरित प्रेषण संबंधित प्रणालीगत विसंतियों तथा एक ही अधिकारी द्वारा की जा रही रोकड़ बही में प्रविष्टियों के सत्यापन और साक्ष्यांकन में गंभीर चूक के कारण नारियल नर्सरी में धन का गबन हुआ है। इसके अतिरिक्त, गबन की गई राशि को संबंधित अधिकारियों द्वारा सरकारी धन से बदल दिया गया, जो अपर्याप्त आंतरिक नियंत्रण को दर्शाता है।

अनुशंसा :

सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि केरल खजाना संहिता और केरल वित्तीय संहिता में निर्धारित मौद्रिक लेनदेन के दैनिक संचालन से संबंधित संहिताबद्ध प्रावधानों को कार्यालय प्रमुखों द्वारा सख्ती से सुनिश्चित किया जाए। निधियों के दुर्विनियोजन को रोकने के लिए प्राथमिक तौर पर अपर्याप्त आंतरिक नियंत्रणों को ठीक किया जाना चाहिए।

(पैराग्राफ 4.1)

निष्फल व्यय

कार्यों के निष्पादन में समन्वय की कमी और केरल राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालय द्वारा प्रभावी निगरानी के अभाव के परिणामस्वरूप दो भवनों पर ₹15.03 करोड़ का निष्फल व्यय और उपकरणों पर ₹5.05 करोड़ का निष्क्रिय निवेश हुआ।

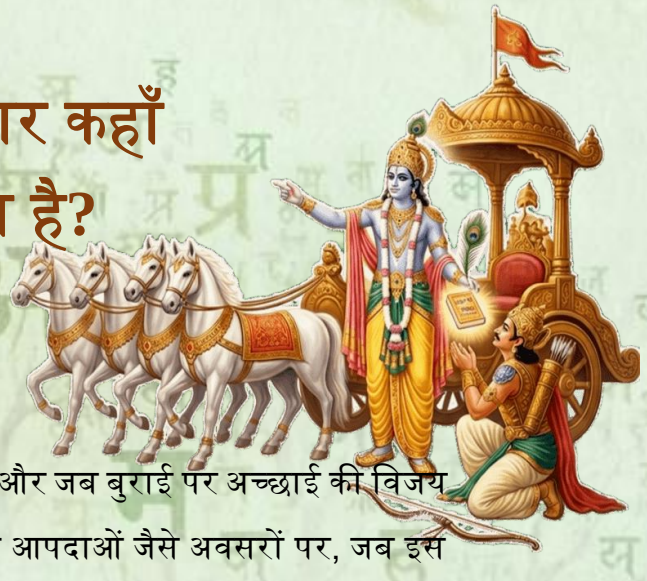
(पैराग्राफ 4.2)

वट्टवडा में बिना मोटर योग्य पहुंच मार्ग के एक अनुपयुक्त स्थल पर ₹2.45 करोड़ की लागत से स्थापित एक कृषि बाजार परिसर, उद्घाटन के बाद से पिछले चार वर्षों से निष्क्रिय पड़ा हुआ है।

(पैराग्राफ 4.3)



भगवान का अवतार कहाँ और क्यों होता है?



श्री उण्णिकृष्णन टी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जब पृथ्वी पर असुरों के अत्याचार से सज्जन लोग दुखी होते हैं, और जब बुराई पर अच्छाई की विजय अनिवार्य हो जाती है ...प्रलय, भीषण सूखा या अन्य प्राकृतिक आपदाओं जैसे अवसरों पर, जब इस दुनिया का विनाश निकट आ जाता है, तब समस्त जीवों की रक्षा के लिए अलौकिक शक्तियों वाले एक रूप में भगवान के अवतार लेने की बात हमने सुनी है।

परंतु, भगवान का अवतार वास्तव में कहाँ होता है और किस लिए होता है, इसका उत्तर भगवद्गीता के चौथे अध्याय के 7वें और 8वें श्लोक में दिया गया है:

“यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥”

जब-जब धर्म की हानि (पतन) होती है और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब भगवान अवतार लेते हैं। 'धर्म' का अर्थ सत्य है, और 'अधर्म' का अर्थ असत्य है। धर्म और अधर्म बाहर कहीं उत्पन्न नहीं होते, बल्कि ये दोनों प्रत्येक व्यक्ति के मन में जन्म लेते हैं। हर मनुष्य की मानसिक वृत्तियों के पतन से ही संपूर्ण संसार में धर्म की हानि होती है। इसलिए, भगवान का अवतार इस संसार में प्रत्येक व्यक्ति के मन के माध्यम से ही होता है।

इस प्रकार हममें से प्रत्येक के मन में अवतरित होने वाले भगवान के दर्शन नित्य उपासना और भक्ति के माध्यम से ही संभव हैं।

“परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

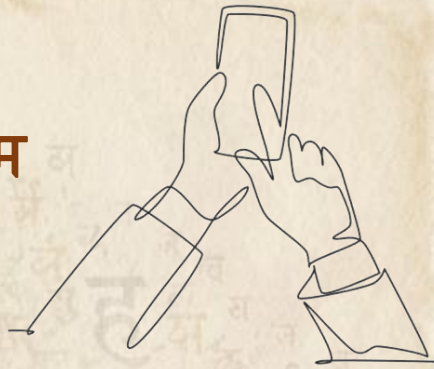
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥”

सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने वाले सज्जन पुरुषों की रक्षा करने, दुष्कर्म करने वालों का विनाश करने और धर्म (सत्य) की स्थापना के लिए भगवान हर मनुष्य के मन में हर क्षण अवतार लेते रहते हैं। यह प्रक्रिया युगों-युगों से चली आ रही है।

इस प्रकार, हममें से प्रत्येक के भीतर सत्य और धर्म के रूप में विराजमान भगवान को पहचानने का एकमात्र उपाय नित्य साधना ही है। जैसा कि कुंजुन्नि मास्टर (केरल के प्रसिद्ध कवि) ने कहा है: **"बड़ी दुनिया को सुधारने का एक छोटा सा सूत्र है, 'मैं स्वयं सुधर जाऊँ'।"**



मेरे हाथ का 'स्मार्ट' गुलाम



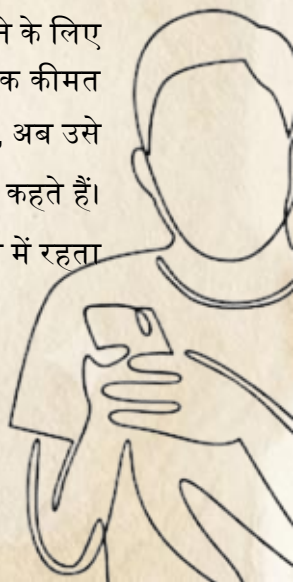
श्री अविनाश नाथ
लेखापरीक्षक

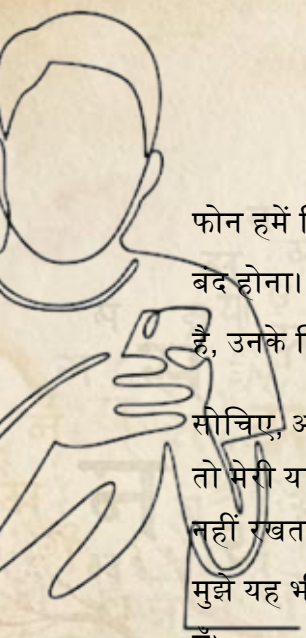
सुबह के ठीक 6:14 बजे हैं मेरे अलार्म बजने से चार मिनट पहले। स्क्रीन का एक हल्का, लयबद्ध प्रकाश मेरे चेहरे पर पड़ता है। यह रोशनी की एक डिजिटल सीटी है जो मुझे नींद की गहरी, धुंधली वादियों से खींचकर सीधे दुनिया भर की खबरों और नोटिफिकेशन की चुभती हुई तेज़ चकाचौंध में ला खड़ा करती है। मैं समय नहीं देखता। मैं अंगड़ाई भी नहीं लेता। मेरा हाथ अनजाने में ही नाइटस्टैंड पर रखे ठंडे कांच के उस आयताकार टुकड़े को ढूंढ लेता है, और सुबह की ताज़ा हवा का एहसास होने से पहले ही, मैं एक उपभोक्ता बन चुका होता हूँ।

मैं स्क्रॉल कर रहा हूँ। मैं रात भर में मिले 'लाइक्स' की गिनती देख रहा हूँ, दुनिया भर के संकटों का लाइव अपडेट पढ़ रहा हूँ, अजनबियों का सजाया हुआ नाश्ता देख रहा हूँ और उन ऐप्स के अर्जेंट नोटिफिकेशन देख रहा हूँ जिनकी परवाह मुझे इस पल से पहले तक बिल्कुल नहीं थी। सुबह के 6:20 बजे तक, मेरा दिमाग जो कुछ मिनट पहले तक सपनों के सुकून भरे विचारों को प्रोसेस कर रहा था अब एक साथ हज़ार तरह की डिजिटल उत्तेजनाओं के बीच पिस रहा है। मैं इस उपकरण का उपयोग करने वाला मालिक नहीं हूँ, बल्कि मैं खुद इसका ईंधन हूँ। जब मैं वहाँ बिस्तर पर पड़ा रहता हूँ, जेब के इस सुपरकंप्यूटर से लगभग लाचार महसूस करता हुआ, तब मुझे एक कड़वा सच समझ में आता है: मेरा फोन बहुत स्मार्ट है, और यह धीरे-धीरे मुझे मानसिक रूप से पंगु बना रहा है।

मुझे गुलाम जैसा महसूस क्यों होता है, यह समझने के लिए मुझे अपनी इस लत के पीछे के तंत्र को देखना होगा। आधुनिक स्मार्टफोन केवल एक ज़रूरत का साधन नहीं है; यह एक प्रयोगशाला में बने पिंजरे जैसा है। इसका हर ऐप आइकन, हर रंग और हर नोटिफिकेशन टोन व्यवहार वैज्ञानिकों और डेटा विश्लेषकों की टीमों द्वारा तैयार किया गया है, जिनका केवल एक ही मकसद है "आपको ऐप पर ज़्यादा से ज़्यादा देर तक रोके रखना।"

जब मैं कोई ऐप खोलता हूँ, तो मैं एक ऐसे चक्र में प्रवेश करता हूँ जो मेरे दिमाग के सोचने-समझने वाले हिस्से (प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स) को दरकिनार कर सीधे भावनाओं वाले केंद्र (अमिगडला) को प्रभावित करता है। यह डोपामाइन का चक्र है। यह ठीक वैसा ही जैविक तंत्र है जो एक चूहे को बार-बार चीनी के दाने के लिए बटन दबाने पर मजबूर करता है। लेकिन हर वक्त अलर्ट रहने की इस स्थिति की एक भारी मानसिक कीमत चुकानी पड़ती है। हमारा दिमाग, जो सदियों से ख़तरों से बचने या खाने की तलाश के लिए बना था, अब उसे हर सेकंड डिजिटल अपडेट ढूंढने के काम में लगा दिया गया है। वैज्ञानिक इसे 'सतत आंशिक ध्यान' कहते हैं। मैं कभी भी कमरे में पूरी तरह मौजूद नहीं होता, क्योंकि मेरे दिमाग का एक हिस्सा हमेशा इस चिंता में रहता है कि कहीं स्क्रीन पर कुछ नया तो नहीं छूट रहा।





फोन हमें जिस सबसे खतरनाक तरीके से मंदबुद्धि बना रहा है, वह है हमारी दिमागी क्षमताओं का इस्तेमाल बंद होना। वैज्ञानिक इसे 'कॉग्निटिव ऑफलोडिंग' (कहते हैं यानी जिन कामों को करने में हमारा दिमाग सक्षम है, उनके लिए बाहरी साधनों पर निर्भर हो जाना।

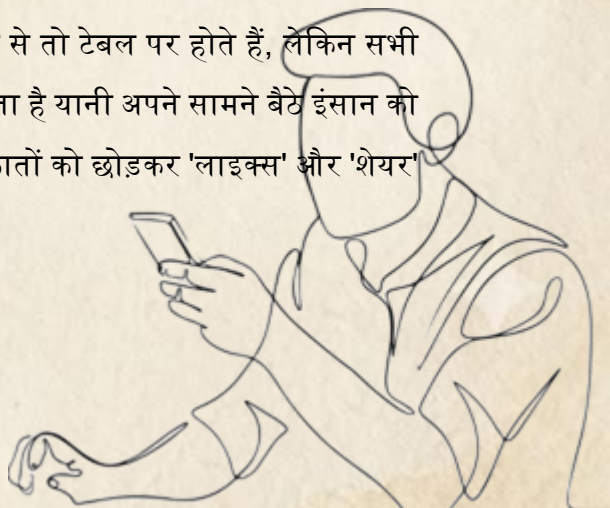
सोचिए, आखिरी बार आपने कब बिना जीपीएस के किसी नई जगह का रास्ता तय किया था? मेरी बात करें, तो मेरी याददाश्त और रास्तों को समझने की क्षमता अब कमज़ोर हो चुकी है। अब मैं सड़कों के लैंडमार्क याद नहीं रखता; मैं बस उस जलती हुई नीली रेखा का पीछा करता हूँ। जब मैं अपनी मंज़िल पर पहुँचता हूँ, तो मुझे यह भी याद नहीं रहता कि मैं वहाँ कैसे पहुँचा, न ही मैं उस डिजिटल स्क्रीन के बिना वापस लौट सकता हूँ।

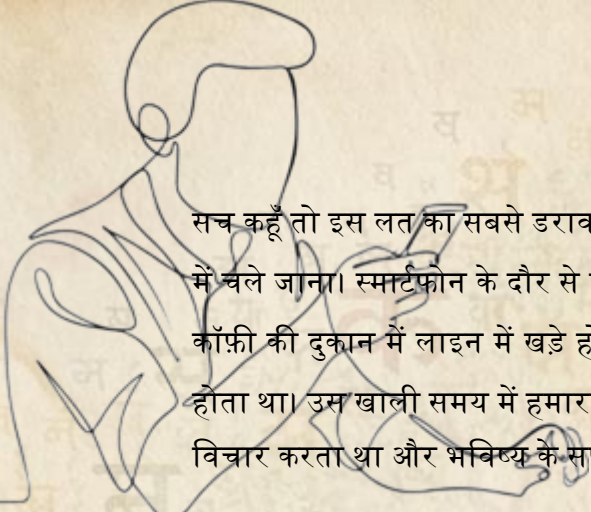
बात सिर्फ रास्तों तक सीमित नहीं है। मुझे अब न तो फोन नंबर याद रहते हैं, न ही किसी के जन्मदिन। जब फोन मेरी याददाश्त का काम खुद कर रहा है, तो मैं कुछ भी नया याद रखने की कोशिश ही नहीं करता। लेकिन अपनी याददाश्त को टेक्नोलॉजी के भरोसे छोड़कर, मैं सोचने और नए विचार बनाने की क्षमता खो रहा हूँ। ज्ञान केवल इंटरनेट पर मौजूद जानकारियों का ढेर नहीं है; यह हमारे दिमाग के विचारों का ताना-बाना है। जब मैं याद रखना छोड़ देता हूँ, तो वह ताना-बाना बिखर जाता है।

स्मार्टफोन की इस लत का सबसे बड़ा शिकार बना है गहरा ध्यान लगाने की क्षमता। गहरी मानसिक एकाग्रता का मतलब है बिना किसी भटकाव के किसी कठिन या रचनात्मक काम पर लंबे समय तक ध्यान केंद्रित करना। यही वह स्थिति है जहाँ नए विचार, सच्ची सीख और सार्थक काम जन्म लेते हैं। फोन ने इस एकाग्रता को खत्म कर दिया है। मैं कोई लेख लिखने बैठता हूँ, और आठ मिनट के भीतर (जो कि एक इंसान का बिना फोन छुए काम करने का औसतन समय बन चुका है) फोन की घंटी बजती है। एक हेडलाइन पर नज़र पड़ती है। मन में उत्सुकता जगती है: किसका मैसेज आया? क्या कोई नया अपडेट है? भले ही फोन स्क्रीन के बल नीचे रखा हो, फिर भी यह दिमाग पर दबाव बनाए रखता है। शोध बताते हैं कि स्मार्टफोन का आसपास होना ही दिमाग की काम करने की क्षमता को घटा देता है, क्योंकि दिमाग का एक हिस्सा लगातार खुद को फोन उठाने से रोकने में ऊर्जा खर्च कर रहा होता है।

सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि दुनिया से जुड़ने की इस होड़ में इंसान कितना अकेला हो गया है। फोन आत्मीयता का वादा करता है एक टेक्स्ट मैसेज, एक कमेंट, एक इमोजी। लेकिन ये बेहद सतही संकेत हैं। इनमें इंसान के चेहरे के भाव, आवाज़ का उतार-चढ़ाव और वह मौजूदगी गायब होती है जो इंसान को वास्तव में दूसरों से जोड़ती है।

मैंने दोस्तों के साथ रेस्तरां में शामें बिताई हैं, जहाँ सब शारीरिक रूप से तो टेबल पर होते हैं, लेकिन सभी का दिमाग हाथ में पकड़ी स्क्रीन में घुसा होता है। इसे 'फ़बिंग' कहा जाता है यानी अपने सामने बैठे इंसान को नज़रअंदाज़ कर फोन में खोए रहना। हमने वास्तविक, मानवीय मुलाक़ातों को छोड़कर 'लाइक्स' और 'शेयर' के बदले मिलने वाले सस्ते डोपामाइन को चुन लिया है।





सच कहूँ तो इस लत का सबसे डरावना पहलू है सोचने-समझने वाले जीवन से हटकर 'प्रतिक्रियाशील' जीवन में चले जाना। स्मार्टफ़ोन के दौर से पहले, इंसान कभी-कभी "बोर" भी होता था। बस का इंतज़ार करते हुए, कॉफ़ी की दुकान में लाइन में खड़े होकर, या बालकनी में बैठकर बारिश देखते हुए हमारे पास खाली समय होता था। उस खाली समय में हमारा दिमाग भटकता था। वह नई चीज़ों को जोड़ता था, अपनी गलतियों पर विचार करता था और भविष्य के सपने बुनता था। वह ऊब ही हमारी कल्पनाशीलता का ईंधन थी।

अब, हमने उस खाली समय को पूरी तरह मार दिया है। हम खाली तीन सेकंड में भी तुरंत स्क्रॉल करने लगते हैं। हमारे पास अब खुद से बात करने का समय ही नहीं बचा है, क्योंकि हम हर समय दूसरों के विचारों, राय और डिजिटल शोर में डूबते रहते हैं।

तो फिर इस मानसिक गुलामी से बाहर कैसे निकला जाए? समाधान फोन को तोड़ देना नहीं है आखिरकार यह तकनीक का एक अद्भुत चमत्कार है। समस्या यह साधन नहीं, बल्कि हमारी सीमाएं न होना है।

* बेडरूम में फोन बंद: मेरे बेडरूम में फोन लाने की सख्त मनाही है। मैंने एक साधारण सा अलार्म क्लॉक खरीद लिया है। मेरी सुबह अब मेरी अपनी होती है, किसी ऐप के नोटिफिकेशन की मोहताज नहीं।

* नोटिफिकेशन पर लगाम: मैंने सीधे कॉल और ज़रूरी मैसेज के अलावा बाकी सभी ऐप्स के नोटिफिकेशन बंद कर दिए हैं।

* एक समय में एक काम: जब मुझे कोई गंभीर काम करना होता है, तो मैं फोन को दूसरे कमरे में रख देता हूँ। उठकर दूसरे कमरे में जाने का आलस ही मुझे बार-बार फोन चेक करने से रोक लेता है।

* खाली बैठने की आदत: मैं लाइन में खड़े रहते समय फोन जेब से न निकालने की कोशिश करता हूँ। शुरुआत में थोड़ी घबराहट होती है, लेकिन फिर दिमाग शांत हो जाता है और मैं वाकई सोचने लगता हूँ सिर्फ रील्स या पोस्ट देखने के बजाय।

स्मार्टफोन एक शीशे की तरह है। जब मैं इसमें देखता हूँ, तो यह मेरी ही इच्छाओं को बढ़ाकर मुझे वापस बेच देता है। यह एक सुंदर झूठ है जो मुझे बताता है कि मैं बहुत जानकार हूँ, जबकि मैं केवल भटका हुआ हूँ; यह कहता है कि मैं दुनिया से जुड़ा हूँ, जबकि मैं केवल उपलब्ध हूँ।

मैं अपनी सोच वापस चाहता हूँ। मैं उस सुकून को वापस चाहता हूँ जहाँ मैं दीवार को ताकते हुए बिना किसी स्क्रीन के विचार कर सकूँ। फोन स्मार्ट है, बिल्कुल। यह मेरी आदतों, मेरी लोकेशन, मेरे डर और मेरी पसंद को मुझसे भी बेहतर जानता है। लेकिन जब मैं इसे टेबल पर उल्टा रखता हूँ और कमरे की शांति को महसूस करता हूँ, तो मुझे समझ आता है कि समझदारी इंटरनेट के फीड में नहीं, बल्कि शांत होकर सोचने में है।

मैं इस मशीन का गुलाम नहीं हूँ। मैं बस एक इंसान हूँ, जो फिर से इस पल में जीना सीख रहा है बिना किसी स्क्रीन को स्क्रॉल किए।





सुश्री शेबा ई
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

विविधता में एकता

देश हमारा रंग बिरंगा
भारत सबसे ऊँचा न्यारा
विविधता में एकता उसकी
श्रेष्ठता की घोषण करती।

वेष अलग है वर्ग अलग है
रूप भाव भी अलग अलग
भारतीय सब एक मन के
एकता रहे हर मन का मंत्र।

नदियाँ बहती अलग अलग पन्थ
संगम सबका समुद्र पर
हर भाषा मिले संस्कृति सुन्दर
एकता की ओर कदम बढ़ायें।

हरेक पल हम कोशिश करते
झंडा हमारा ऊँचा रहें
देश हमारा रंग बिरंगा
भारत सबसे ऊँचा न्यारा।



देख रही थी मैं आकाश

सुश्री नैनसी नेमवाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक खिड़की पर बैठे-बैठे,
देख रही थी मैं आकाश।
सूरज के आने में अभी,
समय पड़ा था अपार।

हो चली थी रात घनी,
और तारों की बारात घनी।
चाँद था आधा-सा उस दिन,
रहा था बैठा तारे गिन।

ऊपर था आकाश अनंत,
नीचे समुद्र जिसका न कोई अंत।
ऊपर तारे कर रहे टिमटिम,
नीचे उनका अद्‌भुत प्रतिबिम्ब।

कुछ आवाज़ पड़ रही थी सुन,
वो तो थी रात कीड़ों की धुन।
चारों ओर था घना सन्नाटा,
ना था वहाँ कोई सैर-सपाटा।

तब जाने की बारी आई,
अंधकार ने चादर सिमटाई।
जैसे ही वो रात गई,
तारों की सब बात गई।

इसके बाद सवेरा आया,
संग में अपने सूरज लाया।
नज़ारा वो मेरे मन को अति भाया।
कलियों ने फिर ली अंगड़ाई,
नई ताकत-सी उनमें आई।

पवन ने फिर दिखलाया रंग,
ऐसे मोड़ा अपना ढंग।
फूलों की शोभा बढ़ाई,
मिट्टी की खुशबू महकाई,
सागर में लहरें भी बिखराईं।

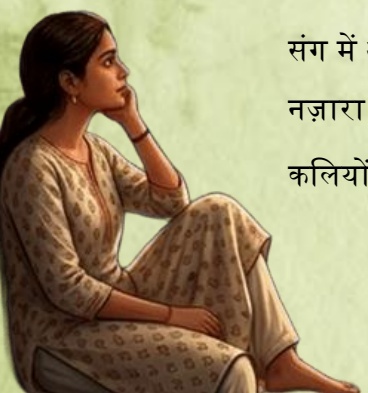
धीरे सब जग जाग गया,
सारा सुख-चैन भाग गया।
शुरू हुआ फिर सबका काम,
लेकर अपने भगवान का नाम।

जब सूरज था सिर पर आया,
उसने अपना सही रूप दिखाया।
उष्मा हो गई तेज़ जब,
लगे पसीने बहने तब।

फिर जब सूरज लगा उतरने,
सबको बहुत से काम थे करने।
धीरे-धीरे हो गई शाम,
ढीले पड़ गए सबके दाम।

थक-हार सब घर को लौटे,
खेल रहे थे बच्चे छोटे।
सूरज फिर जब लगा डूबने,
हम सब चले मैदान घूमने।

देखो सूरज डूब रहा है,
फिर भी सब जग घूम रहा है।



आसमान में कैसी कांति,
चारों ओर हो जाएगी शांति।
ज्यों ही सूर्य हुआ अस्त,
सारे हो गए टीवी में मस्त।
अब आई खाने की बारी,
मिलकर देखी मैच की पारी।
फिर आ गई सबको नींद,
सो गए सब आँखों को मींद।
एक बार फिर चाँद का आना,
संग में अपने तारे लाना।
अंधकार का ऐसा छाना,
देख रही थी बैठे-बैठे,
उस खिड़की से मैं आकाश।





विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर कार्यालय परिसर में महालेखाकारों द्वारा पौधे लगाए गए ।





विश्व व्यवस्था : एक-ध्रुवीय से बहुध्रुवीय तक

सुश्री श्रुति के नायर
आशुलिपिक ग्रेड II

विश्व व्यवस्था कभी स्थिर नहीं रहती, बल्कि समय के साथ शक्ति, अर्थव्यवस्था और तकनीकी समीकरण में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार निरंतर विकसित होती रहती है। इक्कीसवी सदी के तीसरे दशक में वैश्विक राजनीति एक निर्णायक मोड़ पर खड़ी है। भू राजनीति आज केवल सीमाओं और सैन्य शक्ति तक सीमित नहीं रह गई है बल्कि व्यापार, टेक्नॉलजी, साइबर सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, समुद्री मार्गों, अंतरिक्ष और कृत्रिम बुद्धि तक विकसित हो चुकी है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व द्विध्रुवीय व्यवस्था के अंतर्गत अमेरिका और सोवियत संघ के नेतृत्व वाले दो शक्ति गुटों में विभाजित था। 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिका एक मात्र महाशक्ति बनकर उभरा और विश्व में एकध्रुवीय व्यवस्था स्थापित हुई किंतु वर्तमान समय में बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का उदय हो रहा है। विश्व में हो रहे परिवर्तन जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध, पश्चिम एशिया में बढ़ते संघर्ष, चीन का बढ़ता प्रभाव, ईरान-अमेरिका संघर्ष, भारत जैसी उभरती अर्थव्यवस्थाओं का बढ़ता प्रभाव अदि विश्व को एक बहुध्रुवीय व्यवस्था की और अग्रसर कर रहा है। विश्व में अनेक देश आर्थिक और सामरिक दृष्टि से उभर रहे है जिससे वैश्विक शक्ति का संतुलन धीरे धीरे बदल रहा है। यह बदलाव अंतराष्ट्रीय संस्थाओं, व्यापारिक संबंधों और सुरक्षा व्यवस्थाओं पर भी प्रभाव डाल रहा है। आज शक्ति केवल किसी एक राष्ट्र तक सीमित नहीं है बल्कि अनेक देशों क्षेत्रीय संगठनों और आर्थिक समूहों के बीच वितरित हो रही है।

भू राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण पहलु आज आर्थिक शक्ति, सेमीकंडक्टर, दुर्लभ खनिज, ऊर्जा संसाधन तथा समुद्री व्यापर है। जो देश इन क्षेत्रों में अत्मनिर्भरता और तकनीकी श्रेष्ठता प्राप्त कर रहे हैं, वे वैश्विक निर्णयों को अधिक प्रभावी ढंग से प्रभावित कर पा रहे है।

1949 में सोवियत संघ का मुकाबला करने के लिए गठित नाटो लम्बे समय तक पश्चिमी देशों का एक प्रभावशाली सैन्य गढ़बंधन रहा शीत युद्ध के बाद इसके अस्तित्व पर सवाल उठे किंतु रूस-यूक्रेन युद्ध ने इसे पुनः सक्रिय कर दिया। फ़िनलैंड और स्वीडन जैसे देशों का इसमें शामिल होना यह व्यक्त करता है किंतु नाटो के सामने कई चुनौतियाँ है जैसे सदस्य देशों का रक्षा सहयोग को लेकर मतभेद, अमेरिका पर आर्थिक निर्भरता, यूरोप की रणनीतिक स्वायत्तता की बढ़ती मांग तथा बदलती अमेरिकी प्राथमिकतायें जो नाटो की एक जुटता पर सवाल खड़ा करती है।

चीन का उदय : पिछले दो दशकों मे चीन विश्वि की दूसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बन चुका है। "मेड इन चाइना ", बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, कृत्रिम बुद्धि, सेमीकंडक्टर, हरित ऊर्जा और आधुनिक सैन्य क्षमता और दुर्लभ खनिजों में आत्मनिर्भरता ने चीन को अमेरिका का प्रमुख रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी बना दिया है।

रूस की पुनः सक्रिय भूमिका: रूस-यूक्रेन यद्ध ने यह स्पष्ट कर दिया है कि रूस आज भी वैश्विक शक्ति संतुलन को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। ऊर्जा संसाधनों, परमाणु शक्ति तथा सामरिक प्रभाव के कारण रूस अंतराष्ट्रीय राजनीति का महत्वपूर्ण ध्रुव बना हुआ है। 2022 मे शुरू हुआ यह युद्ध केवल दो देशों के बीच संघर्ष नही है बल्कि यह युरोपीय सुरक्षा व्यवस्था और वैश्विक शक्ति संतुलन की परीक्षा बन गया है। अमेरिका और यूरोपीय देशों ने यूक्रेन को व्यापक सैन्य, आर्थिक और कूटनीतक समर्थन दिया, जबकि रूस ने चीन, ईरान और कुछ अन्य साझेदारों के साथ अपने संबंध और मजबूत किये। इस युद्ध के परिणामस्वरूप वैश्विक ऊर्जा बाजार, खाद्य सुरक्षा, हथियारों की दौड़ और अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा। युरोप ने रूसी ऊर्जा पर अपनी निर्भरता कम करने का प्रयास किया, जबकि रूस ने एशियाई देशों के साथ ऊर्जा व्यापर बढ़ाया। इस संघर्ष ने यह भी स्थापित कर दिया कि भविष्य की भू राजनीति आर्थिक प्रतिबंधों, तकनीकी नियंत्रण, ऊर्जा सुरक्षा और दुर्लभ खनिज से भी संचालित होगी।

पश्चिम एशिया में संघर्ष और ईरान की भूमिका : पश्चिम एशिया में बढ़ रहे तनाव ने वैश्विक राजनीति को और जटिल बना दिया है। ईरान क्षेत्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण शक्ति है और विभिन क्षेत्रीय समूहों के साथ उसके सम्बन्ध लम्बे समय से चर्चा का विषय है। हाल के वर्षों में इजराइल और ईरान के बीच प्रत्यक्ष तनाव बढ़ा है, जिससे पूरे क्षेत्र की सुरक्षा और वैश्विक ऊर्जा प्रभावित हुई है। यह संघर्ष अब केवल क्षेत्रीय नही रहा इसके परिणाम अमेरिका, यूरोप, रूस, चीन, भारत तथा खाड़ी देशों की विदेश नीतियों तक दिखाई देने लगी है। तेल की आपूर्ति, वैश्विक ऊर्जा और समुद्री मार्गों पर इसका सीधा प्रभाव पड़ा है।

चीन-रूस-ईरान की बढ़ती निकटता : दूसरी और चीन- रूस और ईरान के बीच सहयोग लगातार बढ़ रहा है। इन तीनों देशों की विदेश नीतियों में कई समानताएँ दिखाई देती है जैसे अमेरिकी वर्चस्व का विरोध, पश्चिमी प्रतबंधों का सामना तथा नई विश्व व्यवस्था की स्थापना की इच्छा। सयुंक्त सैन्य अभ्यास, ऊर्जा सहयोग, स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर साझेदारी मजबूत करना हालाँकि यह नाटो जैसा औपचारिक सैन्य सम्बन्ध नहीं है परंतु इन देशों के बीच बढ़ता सहयोग विश्व शक्ति संतुलन को प्रभावित कर रहा है। ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन जैसे मंच भी वैश्विक शक्ति के पुनर्संतुलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

भारत का उभरता वैश्विक नेतृत्व : भारत विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले देश, तीव्र गति से विकसित होती अर्थव्यवस्था, डिजिटल-इंडिया, अंतरिक्ष कार्यक्रम, लोकतांत्रिक शासन के कारण विश्व मंच पर एक प्रमुख शक्ति के तौर पर उभर रहा है। जी 20 की अध्यक्षता, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर, इंटरनेशनल सोलर अलाइंस और "वसुधेव कुटुम्बकम की भावना भारत की बढ़ती भूमिका को दर्शाता है।

ब्रिक्स, ग्लोबल साउथ और क्षेत्रीय संगठन : ब्रिक्स के विकास तथा विकासशील देशों की बढ़ती भागीदारी ने पश्चिम केंद्रित आर्थिक व्यवस्था को चुनौती दी है, स्थानीय मुद्राओं में व्यापार, ऊर्जा और दुर्लभ खनिजों में

आत्मनिर्भता और वैकल्पिक संस्थाओं पर जोर बहुध्रुवीय व्यवस्था को मजबूत कर रहा है। यूरोपीय संघ (ईयु), आसियान (एएसईएएन), अफ्रीकी संघ (एयु), शंघाई सहयोगी संगठन (एस सी ओ), जी सी सी तथा अन्य क्षेत्रीय संगठन अपने-अपने क्षेत्रों में प्रभावशाली भूमिका निभा रहे हैं।

बहुध्रुवीय व्यवस्था की और : विश्व एक नई शक्ति संतुलन की और बढ़ रहा है। अमेरिका और उसके सहयोगी देशों के सामान चीन, रूस तथा अन्य उभरती शक्तियाँ वैश्विक निर्णय प्रक्रिया में प्रभावशाली भूमिका निभाना चाहती है। तकनीकी प्रतिस्पर्धा, कृत्रिम बुद्धि, सेमीकंडक्टर, साइबर सुरक्षा और दुर्लभ खनिजों का नियंत्रण आधुनिक भू राजनीति के प्रमुख आयाम बन चुके हैं। भारत रणनीतिक स्वायत्तता की नीति का पालन करता है। भारत अमेरिका के साथ रक्षा सहयोग बढ़ा रहा है, वहीं रूस के साथ ऊर्जा और रक्षा संबंध बनाए हुएं है। साथ ही भारत पश्चिम एशिया, यूरोप , जापान और अफ्रीका के साथ भी सहयोग का विस्तार कर रहा है।

अंततः बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था केवल शक्ति प्रदर्शन का प्रतीक नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शासन की बदलती प्रकृति को भी दर्शाती है। वर्तमान समय में विश्वि सहयोग और प्रतिस्पर्धा, दोनों का मिश्रण है। भविष्य की विश्व व्यवस्था इस बात पर निर्भर करेगी की प्रमुख शक्तियाँ अपने राष्ट्र हितों और वैश्विक उत्तरदायित्वों के बीच किस प्रकार संतुलन स्थापित करती हैं।

****





चित्रकार – सुश्री अक्षिता कृष्णा एस पुत्री कृष्ण कुमार,वरि. लेखापरीक्षक



श्री अमित कुमार गिरी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

गीता-रहस्य

मानव चेतना जगाने को, नैतिकता का पाठ पढ़ाने को।

हर युग में प्रभु ने अवतार लिया, मानवता का उद्धार करने को ।।

त्रेता में प्रकट भये राघव, दशग्रीव का अहम् मिटाने को।

द्वापर में कृष्ण का रूप लिया, द्रौपदी की लाज बचाने को।।

दिशाभ्रमित पार्थ के सार्थी बन, रथ धर्म मार्ग पर गमन किया।

कर 'गीता' रस से मार्गदर्शन, उसने कर्म मार्ग पर गमन किया।।

पर कलयुग के इन असित मेघ में, कर्म-धर्म छिप जाते है।

धूली धूसर बादलों में, 'गीतारहस्य' खो जाते है।।

जब जात-धर्म के विविध मार्ग पर, मानवता बट जाती है।

नाना प्रकार की भाषाओं में, नैतिकता मिट जाती है।।

जब माया के बाहुपाश में मानव, नतमस्तक हो जाता है।

तब 'गीता' के उस कर्म-ज्ञान का स्मृति-लोप हो जाता है।।

जब छद्मवेशी के मिथ्याज्ञान से मनुज ग्रसित हो जाता है।

जब विवेकपूर्ण चिंतन का उसके पूर्ण लोप हो जाता है।।

कलयुग में जब रामराज्य के राघव नज़र नही आते।

कलयुग में इस 'याज्ञसैनी' के माधव नज़र नही आते।।

सतत निशा से भीत मनुज को, प्राची की ऊषा दिखाने को।

निज कर्मबोध से विस्मृत 'अर्जुन' को, कर्मबोध करवाने को।।

सर्वव्यापी उस निरंकार का नित-नित वंदन करता हूँ।

बहुरुपी उस अघहारी का अह्वान मैं करता हूँ।।





पहली नौकरी का पहला दिन

श्री सोनू कुमार मीणा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं राजस्थान के भरतपुर जिले के एक छोटे से गाँव से हूँ। हमारा परिवार खेती करता है। पिता जी और माँ खेतों में मेहनत करके घर चलाते हैं। मैं घर का सबसे बड़ा बेटा हूँ। मेरे बाद एक छोटा भाई और एक बहन हैं, जो अभी पढ़ाई कर रहे हैं। गाँव में जब कोई बच्चा बड़ा होता है, तो उसके साथ घरवालों के सपने भी बड़े होने लगते हैं। मेरे साथ भी ऐसा ही था। बचपन से ही लोग कहते थे, "इसे खूब पढ़ाओ, एक दिन सरकारी अफसर बनेगा।" उस समय शायद मुझे इन बातों का मतलब पूरी तरह समझ नहीं आता था, लेकिन इतना ज़रूर समझ आता था कि मुझे कुछ ऐसा करना है जिससे मेरे माता-पिता की मेहनत रंग लाए। हमारे यहाँ सरकारी नौकरी सिर्फ नौकरी नहीं मानी जाती, बल्कि पूरे परिवार के लिए गर्व की बात होती है। यही वजह थी कि बचपन से ही मेरे मन में एक सपना था कि एक दिन सरकारी नौकरी ज़रूर करूँगा। मैंने पढ़ाई की, प्रतियोगी परीक्षाएँ दीं, कभी सफलता मिली तो कभी निराशा भी हाथ लगी। लेकिन मन में यही सोच थी कि नौकरी कहीं भी मिले, मैं पूरी ईमानदारी से करूँगा। अगर अंडमान-निकोबार भी जाना पड़े, तो भी तैयार था। लेकिन भगवान ने मेरे लिए कुछ और ही सोच रखा था।

जब भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक विभाग में सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के पद पर मेरे चयन का परिणाम आया, उस दिन की खुशी मैं शायद कभी शब्दों में नहीं बता पाऊँगा। पहली बार लगा कि सालों की मेहनत सफल हो गई। सबसे बड़ी बात यह थी कि मैं एक राजपत्रित अधिकारी बनने जा रहा था। रिज़ल्ट देखने के बाद सबसे पहले मेरे मन में अपने माता-पिता का चेहरा आया। उनकी आँखों की खुशी मेरे लिए किसी भी पुरस्कार से बड़ी थी। कुछ ही दिनों बाद मुझे पता चला कि मेरी पहली पोस्टिंग केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम में हुई है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि राजस्थान के एक छोटे से गाँव से निकलकर नौकरी के लिए देश के बिल्कुल दूसरे छोर तक जाना होगा। जॉइनिंग का दिन जैसे-जैसे करीब आ रहा था, घर का माहौल भी बदल रहा था। माँ बार-बार पूछती थीं कि "सब सामान रख लिया न?" पिता जी ज़्यादा कुछ नहीं कहते थे, लेकिन बार-बार यही समझाते कि "काम ईमानदारी से करना, बाकी सब अपने आप ठीक हो जाएगा।" जिस दिन घर से निकलना था, मैंने अपना पूरा सामान एक सूटकेस में रखा। सच कहूँ तो उस सूटकेस में सिर्फ कपड़े नहीं थे, बल्कि मेरा पूरा बचपन, मेरे सपने और पूरे परिवार की उम्मीदें भी थीं। रेलवे स्टेशन तक पूरा परिवार मुझे छोड़ने आया। ट्रेन चलने लगी तो मैंने खिड़की से बाहर देखा। माँ हाथ हिला रही थीं। पिता जी हमेशा की तरह अपनी भावनाएँ छिपाने की कोशिश कर रहे थे। उस समय पहली बार एहसास हुआ कि नौकरी मिलने की खुशी जितनी बड़ी है, घर छोड़ने का दर्द भी उतना ही बड़ा होता है।

तिरुवनंतपुरम पहुँचने में लगभग तीन दिन लगे। रास्ते भर ट्रेन की खिड़की से बाहर बदलते हुए नज़ारे देखता रहा। राजस्थान की सूखी धरती धीरे-धीरे हरियाली में बदल गई। हर स्टेशन पर भाषा बदल जाती थी, खाने का स्वाद बदल जाता था और लोगों का पहनावा भी अलग दिखाई देता था। मुझे पहली बार महसूस

हुआ कि हमारा देश सच में कितना बड़ा और खूबसूरत है। 5 मार्च 2023 की रात मैं तिरुवनंतपुरम पहुँचा। स्टेशन से एक छोटा-सा होटल लिया और वहीं रुक गया। अगले दिन मेरी जिंदगी का सबसे खास दिन होने वाला था। शायद इसी वजह से रात को ठीक से नींद भी नहीं आई। सुबह जल्दी उठ गया। तैयार होकर समय से पहले ही कार्यालय के लिए निकल पड़ा। ठीक नौ बजे मैं कार्यालय के गेट पर खड़ा था। दिल की धड़कन थोड़ी तेज थी। मन में कई सवाल थे—नए लोग कैसे होंगे ? भाषा कैसे समझूँगा ? काम कर पाऊँगा या नहीं ?

कार्यालय के अंदर गया तो धीरे-धीरे सारी घबराहट कम होने लगी। वहाँ वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात हुई। मेरे कुछ बैचमेट भी वहीं थे, जो अलग-अलग राज्यों से आए थे। सबके चेहरे पर वही उत्साह था जो मेरे मन में था। जॉइनिंग की सारी औपचारिकताएँ पूरी होने के बाद एक वरिष्ठ अधिकारी ने मुस्कुराकर कहा, "पहले कैंटीन जाकर चाय पी आइए।" मैं कैंटीन पहुँचा। वहाँ चाय के साथ एक पकौड़ा जैसा दिखने वाला नाश्ता मिला। मैंने पूछा तो पता चला कि उसका नामपअ पाळम पोरी है। यह केले से बनने वाला केरल का प्रसिद्ध नाश्ता है। मैंने पहली बार उसे खाया। स्वाद बिल्कुल नया था, लेकिन अच्छा लगा। उस छोटी-सी चाय और नाश्ते ने मुझे यह एहसास कराया कि अब मैं सचमुच एक नई जगह, नई संस्कृति और नए लोगों के बीच हूँ। उस दिन मैंने लोगों को देखा, उनकी भाषा सुनी, उनका रहन-सहन समझने की कोशिश की। बाहर मौसम गर्म और नम था, जो राजस्थान से बिल्कुल अलग था। चारों तरफ नारियल के पेड़ थे, हरियाली थी और एक अलग ही शांति थी। मन ही मन मैं सोच रहा था—ज़िंदगी सच में कितनी अनोखी होती है। जिसने कभी अपने गाँव से बहुत दूर रहने की कल्पना भी नहीं की थी, वह आज देश के दूसरे छोर पर अपनी पहली नौकरी शुरू कर रहा है। बाद में मेरी मुलाकात उत्तर भारत के कुछ अधिकारियों से भी हुई, जो कई वर्षों से केरल में काम कर रहे थे। उनसे बात करके लगा कि चाहे भाषा अलग हो, संस्कृति अलग हो, लेकिन अपनापन हर जगह मिल जाता है।

शाम को जब मैं कार्यालय से बाहर निकला, तो कुछ देर वहीं खड़ा रहा। सुबह मैं इस इमारत में एक नए कर्मचारी की तरह दाखिल हुआ था, लेकिन शाम तक ऐसा लगा जैसे जीवन का एक नया अध्याय शुरू हो गया हो। आज उस दिन को याद करता हूँ तो लगता है कि मेरी पहली नौकरी ने सिर्फ मुझे एक पद नहीं दिया, बल्कि आत्मविश्वास दिया। उसने यह भरोसा दिया कि अगर इरादे मजबूत हों और मेहनत ईमानदारी से की जाए, तो राजस्थान के एक छोटे से किसान परिवार का बेटा भी अपने सपनों को सच कर सकता है। पहली नौकरी का पहला दिन मेरे लिए सिर्फ नौकरी का पहला दिन नहीं था। वह मेरे माता-पिता की मेहनत, उनके विश्वास और मेरे संघर्ष की पहली जीत का दिन था। शायद इसलिए यह दिन मेरी जिंदगी की सबसे खूबसूरत यादों में हमेशा शामिल रहेगा।



मदद की पुकार

सुश्री तीर्था कृष्ण
पुत्री उण्णिकृष्णन टी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

पानी मेरी सोच से भी कहीं ज़्यादा तेज़ी से चढ़ रहा था। जब तक मुझे खतरे की घंटी सुनाई दी, पहली मंज़िल पूरी तरह जलमग्न हो चुकी थी। पूरे इलाके में शायद अब सिर्फ़ मैं ही बचा था, बाकी सब वक्त रहते निकल चुके थे। मैं ही बेफ़िक्र बैठा रहा।

कई दिनों से मूसलाधार बारिश जारी थी। आसपास के इलाकों में बाढ़ की खबरें तो आ रही थीं, पर मुझे अंदाज़ा नहीं था कि पानी यहाँ तक आ पहुँचेगा। शायद बीती रात जब मैं गहरी नींद में था, तभी पास का बाँध टूट गया। सुबह आँख खुली तो देखा कि पूरा ग्राउंड फ़्लोर पानी में समा चुका है।

भागने का मौका तब भी था, पर मुझे लगा कि बारिश थम जाएगी और पानी काम हो जाएगा । यही मेरी सबसे बड़ी भूल साबित हुई। वक्त बीतता गया, मदद की आस में कई घंटे बीत गए, लेकिन कोई रेस्क्यू टीम नहीं आई। धीरे-धीरे हिम्मत टूटने लगी। रह-रहकर विदेश में बैठे परिवार का ख्याल आ रहा था। सुबह से ही फोन बंद पड़ा था, तो उनसे संपर्क करने का कोई रास्ता नहीं बचा। वे न जाने किस हाल में होंगे, यही सोचकर दिल बैठा जा रहा था।

कल ही तो उनसे वीडियो कॉल पर बात हुई थी। मैंने हँसते-हँसते कह दिया था कि घबराने की बात नहीं है, मेरा घर ऊँचाई पर है। मम्मी-पापा बार-बार फोन करने को कह रहे थे और छोटी बहन पूछ रही थी कि घर कब आऊँगा। काश! मैंने उनसे थोड़ी और बात कर ली होती। क्या पता अब कभी उनसे बात हो भी पाएगी या नहीं।

पानी अब छत को छूने लगा था। मैं छत पर बैठा अपनी किस्मत को कोस ही रहा था कि अचानक एक चीख सुनाई दी।

मैं हड़बड़ाकर उठ बैठा। ध्यान से सुना तो दोबारा वही आवाज़ आई। इसका मतलब, इस भयानक सन्नाटे में मेरे अलावा कोई और भी ज़िंदा था! मैं तुरंत नीचे उतरा। दूसरी मंज़िल पर पानी मेरी कमर तक आ चुका था। चीख पड़ोस के घर से आ रही थी। मैं पानी में तैरता हुआ खिड़की के रास्ते उस घर में दाखिल हुआ। कोई कमरे का दरवाज़ा पीट-पीटकर मदद के लिए चिल्ला रहा था। दरवाज़ा बाहर से बंद था और अंदर से किसी छोटी बच्ची की आवाज़ आ रही थी।

“घबराओ मत, मैं तुम्हें बाहर निकालता हूँ!” मैंने चिल्लाकर कहा। पर दरवाज़ा टस से मस नहीं हुआ। तभी मेरी नज़र कोने में रखे अग्निशामक यंत्र पर पड़ी। मैंने बिना सोचे-समझे उसे उठाया और ताले पर ताबड़तोड़ वार करने लगा। आख़िरकार ताला टूट गया।

दरवाज़ा खुलते ही सात-आठ साल की एक मासूम बच्ची दौड़कर आई और मुझसे कसकर लिपट गई। वह रो रही थी। उसे देखकर मुझे अपनी छोटी बहन की याद आ गई। उसी पल मैंने मन ही मन कसम खाई कि चाहे जो हो जाए, मैं इस बच्ची को कुछ नहीं होने दूँगा।

पूछने पर उसने अपना नाम ईवा बताया। उसके घरवाले बीती रात ही उसे कमरे में बंद करके चले गए थे। बेचारी को तब पता चला जब पानी उसके कमरे में घुसने लगा। मैंने पूरे घर में छानबीन की और खुशकिस्मती से एक पुराना फोन मिल गया। किस्मत ने साथ दिया और फोन चालू था। मैंने तुरंत इमरजेंसी नंबर घुमाया, अपनी लोकेशन बताई और मदद की गुहार लगाई। उन्होंने रेस्क्यू टीम भेजने का भरोसा दिया।

पानी तेज़ी से बढ़ रहा था, इसलिए मैं ईवा को लेकर छत पर चला आया। पानी लगभग छत तक पहुँच ही चुका था कि दूर से एक रेस्क्यू बोट आती दिखाई दी। मैंने दोनों हाथ हवा में लहराकर उन्हें इशारा करने लगा। बोट पर सवार लोगों ने मुझे देख लिया और हमारी तरफ नाव मोड़ ली।

“ईवा! देखो, मदद आ गई!” यह कहने के लिए जैसे ही मैं पीछे मुड़ा, मेरे पैर तले ज़मीन खिसक गई।

ईवा वहाँ नहीं थी। वह गायब हो चुकी थी। मैंने चीख-चीखकर उसका नाम पुकारा, घर का कोना-कोना देख लिया, पर उसका कोई अता-पता नहीं था। इतने में बोट पास आ गई। उन्होंने मुझे ऊपर खींचते हुए कहा, “जल्दी आओ, पानी बहुत बढ़ रहा है!”

मैंने रोते हुए उनसे ईवा के बारे में कहा, “अकेले नहीं जाऊँगा, अंदर एक बच्ची है!”

पर बोट वाले अड़ गए, “भाई, हम दूर से देखते आ रहे हैं, इस छत पर तुम्हारे अलावा कोई नहीं था।“

न चाहते हुए भी मुझे बोट पर चढ़ना पड़ा। राहत शिविर पहुँचकर भी मेरा दिल भारी था। मैं खुद को बेहद कोस रहा था कि मैं उस बच्ची को बचा नहीं पाया। मैंने शिविर में हर किसी से ईवा के बारे में पूछा, पर किसी ने उसका नाम तक नहीं सुना था। तभी पास बैठे एक बुजुर्ग मेरी बात सुनकर चौंक गए।

उन्होंने गंभीर आवाज़ में कहा, “बेटा, ईवा नाम की एक बच्ची आज से ठीक पचास साल पहले आई इसी विनाशकारी बाढ़ में डूबकर मर गई थी। उसके घरवाले उसे बंद करके भाग गए थे।“

यह सुनते ही मेरे रोंगटे खड़े हो गए। मैं सन्न होकर वहीं बैठ गया।

शायद ईवा उस घर को छोड़कर कभी गई ही नहीं थी। उसकी आत्मा इतने सालों से उसी घर में भटक रही थी—शायद अगली बाढ़ के इंतज़ार में, ताकि जो दर्द उसने सहा, वो किसी और को न सहना पड़े। उस रात मुझे एक गहरी सच्चाई का एहसास हुआ।

मुझे लगा था कि ईवा को मेरी ज़रूरत थी, पर सच तो यह था कि उस भयानक रात मुझे डूबने से बचाने के लिए ईवा आई थी।

ओणम 2026











केरल का प्रमुख त्योहार ओणम कार्यालय में हर्षोल्लास और पारंपरिक उत्साह के साथ मनाया गया। केरल की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं से युक्त समारोह ने आपसी सौहार्द, एकता और भाईचारे की भावना को और मजबूत कर दिया। इस आनंदमय आयोजन की कुछ सुंदर स्मृतियां :






ഓണം'26
AGORC
KAWAI






ഓണം'26


ഓണം'26






ഓണം'26



श्री अनिल कुमार के,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पिता

क्या पिता केवल एक शब्द है
क्या पिता केवल एक रिश्ता है
पिता जीवन का अनमोल संपदन है
पिता सृष्टि का मूल कारण है।

अपने घर का राजा है पिता
परिवार का मुख्य स्तम्भ है पिता
प्यार के धूप में तपने वाला है पिता
ममता के पसीने में डूबने वाला है पिता

रागार्द्र चाँद के समान तरल है पिता
कोप से जलाने वाला सूर्य है पिता
स्नेह स्पर्श रूपी पवन है पिता
मन को शीतल कर देने वाला चंदन है पिता ।

जिम्मेदारी रूपी गाड़ी का सारथी है पिता
बच्चों को बराबरी से देखने वाला साथी है पिता
बाहर से कठोर पर अंदर से कोमल है पिता
खानदान के संरक्षण का फौलादी किला है पिता।

परेशानियों से लड़ने वाली तलवार है पिता
संघर्ष रूपी आंधी को रोकनेवाली दीवार है पिता
सपनों को पूरा करने की चिंता में सदा
घोड़े के वेग से दौड़ने वाला है पिता।

सब देने वाला खुदा है पिता
खुद तो कुछ माँगता नहीं है पिता
औरों की नितांत खुशी के लिए
अपने जीवन में सब कुछ सहता है पिता ।



घर से दूर, सपनों के करीब

श्री यश कुमार
लेखापरीक्षक

कहते हैं कि कुछ सफ़र मंज़िल तक पहुँचने के लिए नहीं, बल्कि इंसान को बदलने के लिए होते हैं। पिछले एक साल में मैंने यही महसूस किया। जब मैं आज पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो लगता है कि ज़िंदगी ने मुझे बहुत कम समय में बहुत कुछ सिखा दिया। यह कहानी सिर्फ़ मेरी पहली सरकारी नौकरी की नहीं है, बल्कि उस सफ़र की है जिसने मुझे घर से दूर तो किया लेकिन साथ ही सपनों के और करीब ले आया। सरकारी नौकरी का सपना लाखों युवा देखते हैं और उन्हीं लाखों युवाओं में से एक मैं भी था। घर में हमेशा यही सुना था कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता। माँ-पापा ने कभी हम पर कोई दबाव नहीं डाला, लेकिन उनकी उम्मीदें हमेशा मुझे आगे बढ़ने की ताकत देती थीं। पढ़ाई पूरी होने के बाद मैंने एसएससी की तैयारी शुरू की। कई बार पढ़ते-पढ़ते थक जाता था। कभी लगता था कि इतनी बड़ी प्रतियोगिता में पता नहीं मेरा नंबर आएगा भी या नहीं। लेकिन हर बार यही सोचकर फिर किताब खोल लेता कि अगर आज हार मान ली, तो शायद सारी ज़िंदगी अफ़सोस रहेगा।

फिर वह दिन आया जिसका मैं लंबे समय से इंतज़ार कर रहा था। परिणाम आया और मेरा चयन भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के कार्यालय में लेखापरीक्षक के पद पर हो गया। कुछ पल के लिए तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ। उस समय मैं लाइब्रेरी में था और सबसे पहले मैंने घर पर फोन किया। माँ ने जैसे ही मेरी आवाज़ सुनी, पूछा, "रिज़ल्ट आ गया?" मैंने बस इतना कहा, "हाँ माँ... हो गया।" कुछ सेकंड दोनों तरफ़ चुप्पी रही। शायद उस चुप्पी में ही सारी खुशी छिपी थी। उस दिन पहली बार लगा कि मेहनत सच में रंग लाती है। कुछ दिनों बाद नियुक्ति पत्र मिला। उसमें लिखा था कि मेरी पोस्टिंग तिरुवनंतपुरम, केरल में हुई है। खुशी तो बहुत थी, लेकिन मन में एक अजीब-सी बेचैनी भी थी। मैं उत्तर भारत से पहली बार इतनी दूर जा रहा था। घर छोड़ने की बात सोचकर ही मन भारी हो जाता था। लेकिन नौकरी की शुरुआत भी तो यहीं से होनी थी।

जिस दिन घर से निकला, उस सुबह परिवार के सब लोग सामान्य होने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन कोई सामान्य नहीं था। माँ बार-बार पूछ रही थीं कि सामान ठीक से रख लिया न। पापा हमेशा की तरह कम बोले, लेकिन जाते-जाते उन्होंने बस इतना कहा, "काम ईमानदारी से करना, बाकी अच्छे कर्म का परिणाम हमेशा अच्छा ही होता है।" और आज भी उनके ये शब्द मेरे साथ चलते हैं। फिर मेरा सफ़र शुरू हुआ। रेल का सफ़र बहुत लंबा था। खिड़की के बाहर बदलते हुए शहर, खेत, पहाड़ और फिर धीरे-धीरे बदलती भाषा, बदलता खाना और बदलता मौसम... ऐसा लग रहा था जैसे मैं सिर्फ़ जगह नहीं बदल रहा, बल्कि ज़िंदगी का एक नया अध्याय शुरू होने वाला है। कई बार मोबाइल में घर की तस्वीरें देखता, फिर बाहर देखने लगता। मन में उत्साह भी था और थोड़ा डर भी। जब ट्रेन तिरुवनंतपुरम पहुँची, तो सबसे पहले जो चीज़ मेरे मन को छू

गई, वह थी यहाँ की हरियाली। स्टेशन से बाहर निकलते ही चारों तरफ़ नारियल के पेड़, साफ़ सड़कें और एक अलग-सी शांति महसूस हुई। यह शहर मेरे लिए बिल्कुल नया था, लेकिन पहली नज़र में ही अच्छा लगा।

असल चुनौती तो उसके बाद शुरू हुई। मुझे मलयालम नहीं आती थी और बहुत से लोगों को हिंदी नहीं आती थी। शुरुआत में लगा कि रोज़मर्रा के छोटे-छोटे काम भी मुश्किल हो जाएँगे। लेकिन कुछ ही दिनों में मेरी यह सोच भी बदल गई। मैंने देखा कि अगर आप मुस्कुराकर बात करें, तो सामने वाला भी आपकी मदद करने की पूरी कोशिश करता है। कई बार मैं अंग्रेज़ी बोलता, सामने वाला अपनी तरफ़ से समझाने की कोशिश करता और किसी तरह बात बन ही जाती। और इससे यह एहसास हुआ कि इंसानियत की भाषा सबसे आसान होती है। कुछ दिन कमरा ढूँढने में निकल गए। पहली बार अकेले रहना भी एक नया अनुभव था। पहले घर में कभी यह नहीं सोचना पड़ता था कि गैस है या नहीं, कपड़े कब धोने हैं या राशन कब ख़त्म हो जाएगा। अब हर छोटी चीज़ खुद देखनी पड़ती थी। शुरू में थोड़ा अजीब लगा, लेकिन धीरे-धीरे यही छोटी-छोटी ज़िम्मेदारियाँ मुझे आत्मनिर्भर बनाती चली गईं।

फिर आया नौकरी का पहला दिन। सच कहूँ तो उस सुबह मैं थोड़ा घबराया हुआ था। मन में कई सवाल थे। दफ़्तर कैसा होगा? लोग कैसे होंगे? काम समझ आएगा या नहीं? लेकिन जैसे ही दफ़्तर पहुँचा, मेरी आधी घबराहट वहीं खत्म हो गई। वरिष्ठ अधिकारियों ने बहुत सहज तरीके से मेरा स्वागत किया। सहकर्मियों ने भी नए व्यक्ति की तरह नहीं, बल्कि अपने साथी की तरह अपनाया। किसी ने सीट दिखाई, किसी ने फाइलों के बारे में बताया, तो किसी ने चाय के लिए साथ चलने को कहा। उस दिन महसूस हुआ कि नई जगह पर शुरुआत आसान तब हो जाती है, जब लोग अच्छे मिल जाएँ। एक लेखापरीक्षक के रूप में सब कुछ नया था। फाइलें, नियम, प्रक्रिया—सब कुछ धीरे-धीरे समझ में आने लगा। कई बार एक ही बात दोबारा पूछनी पड़ती थी। पहले थोड़ी हिचकिचाहट होती थी, लेकिन बाद में समझ आया कि सीखने के लिए सवाल पूछना तो ज़रूरी है। अच्छी बात यह रही कि किसी ने कभी यह महसूस नहीं होने दिया कि मैं नया हूँ।

धीरे-धीरे दिन बीतने लगे। दफ़्तर का काम समझ आने लगा और सहकर्मियों के साथ अपनापन भी बढ़ने लगा। दोपहर का खाना अब अकेले नहीं होता था। अलग-अलग राज्यों से आए लोगों के साथ बैठकर खाना खाना अपने आप में एक नया अनुभव था। तब एक और एहसास हुआ कि भारत सच में विविधताओं का देश है, लेकिन इन विविधताओं के बीच अपनापन कहीं ज़्यादा बड़ा है। दफ़्तर के काम के साथ-साथ मैं धीरे-धीरे इस शहर को भी समझने लगा। रविवार की छुट्टी मिलती, तो कभी समुद्र किनारे चला जाता, कभी किसी पार्क में बैठ जाता। समुद्र की लहरों को देखते हुए अक्सर घर की याद आ जाती थी। सोचता था कि एक साल पहले तक मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं देश के एक ऐसे कोने में बैठा होऊँगा, जहाँ सब कुछ मेरे लिए नया होगा। लेकिन शायद ज़िंदगी की खूबसूरती यही है। वह हमें वहाँ ले जाती है, जहाँ जाने के लिए हमने कभी सोचा भी नहीं होता। केरल की सबसे अच्छी बात मुझे लगी यहाँ के लोग। मैंने हमेशा महसूस किया कि यहाँ लोग बिना किसी दिखावे के मदद करते हैं। चाहे दफ़्तर का कोई कर्मचारी हो, दुकान वाला हो या ऑटो चालक, हर किसी के व्यवहार में एक सादगी दिखाई देती है। भाषा अलग है, लेकिन फिर भी सब कुछ बिल्कुल अपना-सा लगता है। कई बार ऐसा हुआ कि मुझे कोई रास्ता समझ नहीं आया। सामने वाले ने खुद आगे बढ़कर मेरी मदद की। और इस से समझ आता है कि इंसानियत की कोई भाषा नहीं होती।

धीरे-धीरे मैंने भी मलयालम के कुछ शब्द सीखने शुरू किए। शुरुआत में उनका उच्चारण करना आसान नहीं था, लेकिन जब भी मैं किसी से उसकी भाषा में दो-चार शब्द बोलता, उसके चेहरे पर जो मुस्कान आती, वह मुझे बहुत अच्छी लगती थी। उस दिन एक और बात का एहसास हुआ कि किसी जगह को अपना बनाने के लिए जरूरी नहीं है कि आप वहाँ की भाषा को पूरी तरह से सीखें या नयी जीवनशैली अपनाए, बल्कि अपनेपन के लिए आप जहां भी जा रहे है वहाँ के लोगों का सम्मान करना सबसे ज़रूरी होता है। खाने की बात करूँ तो शुरुआत में सबसे ज़्यादा घर के खाने की याद आती थी। रोज़ वही चावल, सांभर और अलग-अलग तरह की सब्ज़ियाँ मेरे लिए नए स्वाद थे। शुरू में थोड़ा समय लगा, लेकिन बाद में इन्हीं स्वादों की आदत हो गई। अब तो जब कभी छुट्टी लेकर घर जाता हूँ, तो माँ से मज़ाक में कहता हूँ कि आज तो सांभर बना दीजिए। वो हँसकर कहती हैं, “लगता है केरल ने तुम्हें अपना बना ही लिया।”

पहली तनख्वाह का दिन मेरे जीवन के सबसे यादगार दिनों में से एक है। यह मेरे जीवन की सबसे पहली कमाई तो नहीं थी लेकिन फिर भी यह बहुत खास पलों में से एक था। तनख्वाह से मैंने कुछ पैसे घर भेजे और परिवार के लिए छोटे-छोटे उपहार खरीदे। उस समय जो खुशी मुझे महसूस हो रही थी और जो गर्व मेरे परिवार वाले महसूस कर रहे थे उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। त्योहारों पर घर की याद सबसे ज़्यादा आती है। दीवाली हो या होली, वीडियो कॉल पर पूरे परिवार को साथ देखकर मन कुछ देर के लिए उदास हो जाता था। पहले जहाँ त्योहार का मतलब घर की रौनक, रिश्तेदारों की आवाज़ें और माँ के हाथ का खाना होता था, अब वही दिन एक कमरे में बीतते थे। लेकिन ऐसे समय में दफ़्तर के साथी कभी अकेलापन महसूस नहीं होने देते थे। तभी महसूस हुआ कि रिश्ते सिर्फ़ खून से नहीं, अपनेपन से भी बनते हैं।

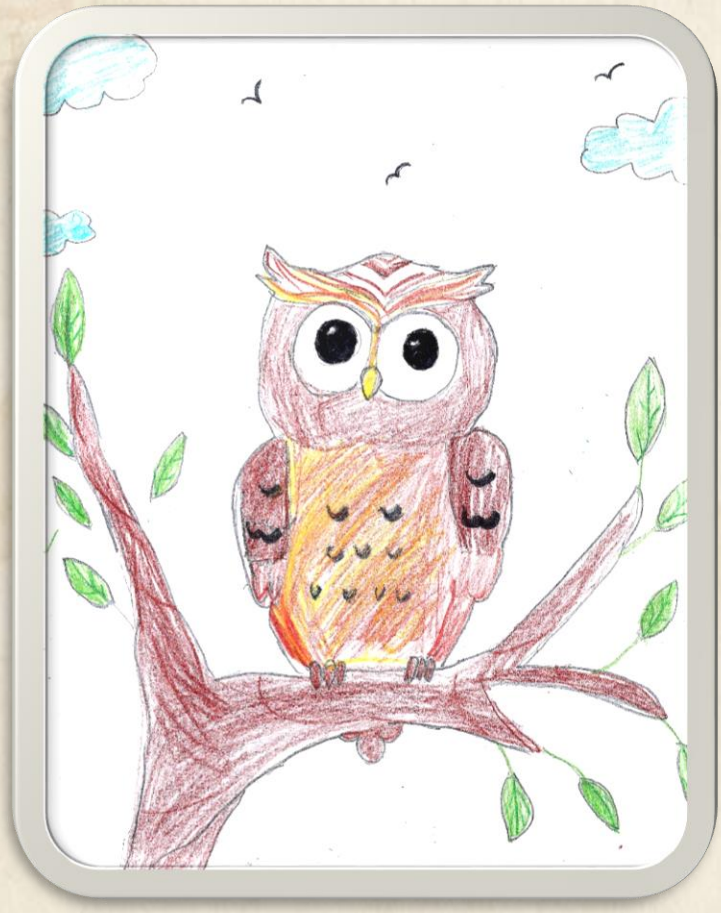
इस एक साल में मैंने सिर्फ़ नौकरी करना नहीं सीखा, बल्कि ज़िंदगी को समझना भी सीखा। घर से दूर रहकर यह एहसास हुआ कि माँ-पापा हमारे लिए कितनी छोटी-छोटी बातें बिना बताए करते हैं। जब खुद कपड़े धोने पड़े, बीमार होने पर खुद डॉक्टर के पास जाना पड़ा, या देर रात कमरे में अकेले बैठना पड़ा, तब समझ आया कि परिवार की मौजूदगी कितनी बड़ी ताकत होती है। दूसरी तरफ़, इस सफ़र ने मुझे आत्मविश्वास दिया। जो लड़का पहली बार घर छोड़ते समय थोड़ा घबराया हुआ था, वही आज नए लोगों से मिलने, नई ज़िम्मेदारियाँ निभाने और नई जगहों पर खुद को ढालने में बिल्कुल नहीं घबराता। और शायद यही इस सफ़र की सबसे बड़ी कमाई है।

अब मेरी नौकरी का एक साल पूरा हो चुका है, तो मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि यह साल मेरी ज़िंदगी का सबसे सीख देने वाला साल रहा। मुझे एक अच्छा संस्थान मिला, अच्छे अधिकारी मिले, शानदार सहकर्मी मिले और सबसे बढ़कर देश के एक ऐसे हिस्से को करीब से जानने का मौका मिला जिसे "गॉड्स ऑन कंट्री" के नाम से जाना जाता है। आज भी जब कभी शाम को समुद्र किनारे बैठता हूँ, तो मन अपने आप उस दिन की तरफ़ चला जाता है, जब मैं पहली बार घर से निकला था। तब मन में डर ज़्यादा था और विश्वास कम। आज डर लगभग खत्म हो चुका है और विश्वास पहले से कहीं ज़्यादा मज़बूत है। इसी का नाम ज़िंदगी है जो आपको बीतते समय के साथ ढलना और जीना सिखा ही देती है। कभी कुछ पाने के लिए कुछ छोड़ना पड़ता है तो कभी अपने "कंफर्ट ज़ोन" से निकलना पड़ता है। अगर मैं घर से दूर होने के डर से बाहर नहीं निकलता, तो

शायद अपने सपनों तक नहीं पहुँच पाता। आज भी घर की याद आती है, माँ की याद आती है, पापा की सलाह याद आती है, लेकिन अब यह दूरी मुझे कमज़ोर नहीं करती। बल्कि हर दिन याद दिलाती है कि मैं यहाँ क्यों आया था।

“घर से दूर, सपनों के करीब”सिर्फ़ एक शीर्षक नहीं है बल्कि यह मेरे पिछले एक साल की पूरी कहानी है। घर से दूर रहकर मैंने सिर्फ़ नौकरी नहीं की, बल्कि खुद को जाना, नए लोगों को अपनाया, नई संस्कृति को समझा और यह सीखा कि सपनों की राह आसान नहीं होती। लेकिन जब परिवार का भरोसा, अपनी मेहनत और अच्छे लोगों का साथ मिल जाए, तो हर अनजान शहर धीरे-धीरे अपना लगने लगता है। आज अगर कोई मुझसे पूछे कि इस एक साल की सबसे बड़ी सीख क्या रही, तो मेरा जवाब बहुत सीधा होगा —"सपनों तक पहुँचने का रास्ता कभी-कभी घर से होकर नहीं, घर से दूर होकर जाता है।" आज जब पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो महसूस होता है कि घर से दूर आने का फैसला आसान तो बिल्कुल नहीं था, लेकिन यही फैसला मेरी ज़िंदगी का सबसे सही फैसला बन गया। उस दूरी ने ही मुझे अपने सपनों के सबसे करीब पहुँचा दिया।"

****





चित्रकार – सुश्री अलीसा एंसी टॉम पुत्री टॉम एफ जो, वरि. लेखापरीक्षक



व्यावसायिक चिकित्सा

सुश्री अज़िन जी. नेल्लिस्सेरी
पुत्री गॉडसन पॉल एन, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

व्यावसायिक चिकित्सा एक ऐसी चिकित्सा है जो लोगों को अपने रोज़मर्रा के काम खुद करने में मदद करती है। यदि किसी व्यक्ति को बीमारी, चोट, जन्म से किसी समस्या या मानसिक परेशानी के कारण दैनिक कार्य करने में कठिनाई होती है, तो व्यावसायिक चिकित्सा उसकी सहायता करती है।

व्यावसायिक चिकित्सक पहले व्यक्ति की समस्या को समझते हैं और उसके बाद क्षमता का आकलन करते हैं। इसके लिए एक विशेष उपचार योजना बनाते हैं जिसमें अलग-अलग प्रकार के अभ्यास, खेल, हाथों के कार्य, लिखने का अभ्यास, संतुलन बनाने के व्यायाम और दैनिक जीवन की गतिविधियाँ शामिल होती हैं।

व्यावसायिक चिकित्सा का उद्देश्य केवल बीमारी का इलाज करना नहीं है, बल्कि व्यक्ति को फिर से स्वतंत्र बनाना है। इससे व्यक्ति अपने दैनिक कार्य जैसे नहाना, कपड़े पहनना, खाना खाना, लिखना, पढ़ना, घर का काम करना और नौकरी करना आसानी से सीख सकता है।

यह चिकित्सा बच्चों, युवाओं, सभी के लिए लाभदायक है। मानसिक स्वास्थ्य में भी व्यावसायिक चिकित्सा का महत्वपूर्ण स्थान है। तनाव, चिंता, या अन्य मानसिक समस्याओं से परेशान लोगों को अपना आत्मविश्वास बढ़ाने और समाज में फिर से सक्रिय होने में सहायता मिलती है।

व्यावसायिक चिकित्सक अस्पतालों, पुनर्वास केंद्रों, स्कूलों, विशेष विद्यालयों, वृद्धाश्रमों और निजी क्लीनिकों में कार्य करते हैं। वे रोगी के परिवार को भी सही तरीके से देखभाल करने और घर का वातावरण सुरक्षित बनाने के बारे में सलाह देते हैं।





नारीवाद वास्तव में क्या है?

सुश्री गौरीआनंदन एस एस
पुत्री संध्या पी वी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

नारीवाद को अक्सर एक ऐसे आंदोलन के रूप में गलत समझा जाता है जिसका उद्देश्य महिलाओं को पुरुषों से अधिक शक्ति दिलाना है। वास्तव में, नारीवाद वह विचार है जो मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति, चाहे उसका लिंग कोई भी हो, समान अधिकार, समान अवसर और समान सम्मान का अधिकारी है। यह एक सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आंदोलन है जो लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव का विरोध करता है और एक न्यायपूर्ण तथा समानतापूर्ण समाज की स्थापना के लिए कार्य करता है।

नारीवाद की जड़ें कई शताब्दियों पुरानी हैं। एक समय था जब दुनिया के अनेक देशों में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने, मतदान करने, संपत्ति रखने और सार्वजनिक जीवन में भाग लेने जैसे बुनियादी अधिकारों से वंचित रखा जाता था। इन असमानताओं को समाप्त करने के लिए नारीवादी आंदोलनों ने संघर्ष किया। इसके परिणामस्वरूप अनेक देशों में महिलाओं को मतदान का अधिकार मिला, उच्च शिक्षा प्राप्त करने, विभिन्न व्यवसायों में कार्य करने और राजनीति में भाग लेने के अवसर प्राप्त हुए। इन उपलब्धियों ने केवल महिलाओं का ही नहीं, बल्कि पूरे समाज का विकास किया।



हालाँकि, नारीवाद केवल महिलाओं के अधिकारों तक सीमित नहीं है। यह उन हानिकारक सामाजिक धारणाओं पर भी प्रश्न उठाता है जो सभी लोगों को प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, यह धारणा कि महिलाओं का कार्य केवल घर संभालना है या पुरुषों को कभी अपनी भावनाएँ व्यक्त नहीं करनी चाहिए, व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करती है। नारीवाद लोगों को पुराने और रूढ़िगत लैंगिक बंधनों से मुक्त होकर अपनी पसंद का जीवन जीने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह सभी के लिए सम्मान, समानता और गरिमा की वकालत करता है।

नारीवाद के अनेक रूप हैं क्योंकि अलग-अलग देशों, संस्कृतियों और समुदायों की महिलाओं को अलग-अलग प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कुछ नारीवादी समान वेतन और रोजगार के अवसरों पर ध्यान देते हैं, जबकि अन्य महिलाओं के विरुद्ध हिंसा को समाप्त करने, शिक्षा तक पहुँच बढ़ाने या नेतृत्व के पदों पर समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए कार्य करते हैं। आधुनिक नारीवाद यह भी स्वीकार करता है कि जाति, वर्ग, विकलांगता और संस्कृति जैसे कारक भी लोगों के साथ होने वाले भेदभाव के अनुभवों को प्रभावित करते हैं। यह व्यापक दृष्टिकोण अधिक समावेशी और प्रभावी समाधान विकसित करने में सहायता करता है।

अपने सकारात्मक उद्देश्यों के बावजूद, नारीवाद की कभी-कभी आलोचना की जाती है या उसे गलत समझा जाता है। कुछ लोग मानते हैं कि नारीवादी पुरुषों के विरोधी होते हैं, जबकि यह सत्य नहीं है। नारीवाद का उद्देश्य किसी एक असमानता को दूसरी असमानता से बदलना नहीं है। इसका उद्देश्य हर प्रकार के भेदभाव और अन्याय का विरोध करना है। अनेक पुरुष भी नारीवाद का समर्थन करते हैं क्योंकि वे समानता और न्याय में विश्वास रखते हैं। लैंगिक समानता से परिवार, कार्यस्थल और समाज सभी लाभान्वित होते हैं, क्योंकि इससे प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रतिभा और क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर मिलता है, न कि रूढ़िगत धारणाओं के आधार पर सीमित किया जाता है।



आज भी दुनिया के अनेक हिस्सों में महिलाओं को असमान वेतन, शिक्षा के सीमित अवसर, कार्यस्थल पर भेदभाव तथा लैंगिक हिंसा जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन चुनौतियों का समाधान सरकारों, समुदायों और प्रत्येक नागरिक के संयुक्त प्रयासों से ही संभव है। शिक्षा और जागरूकता पूर्वाग्रहों को समाप्त करने तथा समानता को बढ़ावा देने के सबसे प्रभावी साधन हैं।

नारीवाद पुरुषों और महिलाओं के बीच श्रेष्ठता या संघर्ष का नाम नहीं है। यह न्याय, समान अधिकार और प्रत्येक व्यक्ति के सम्मान की स्थापना का आंदोलन है। एक सच्चे नारीवादी समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपने सपनों को पूरा करने, बिना किसी भय के स्वयं को अभिव्यक्त करने और अपने लिंग की परवाह किए बिना सम्मानपूर्वक जीवन जीने की स्वतंत्रता प्राप्त होती है। नारीवाद के वास्तविक अर्थ को समझकर हम एक ऐसे विश्व के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं जो समानता, करुणा और पारस्परिक सम्मान पर आधारित हो।









चित्रकार- सुश्री अमेया एस,पुत्री सुश्री इंदुलेखा सजिकुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी





चित्रकार-सुश्री अनश्वरा एस पुत्री सुश्री इंदुलेखा सजिकुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी





राजभाषा हिंदी: एक-शब्द प्रश्नोत्तरी

1. भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा क्या है?
2. आधिकारिक कार्यों के लिए हिंदी किस लिपि में लिखी जाती है?
3. भारत में प्रतिवर्ष किस तिथि को 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है?
4. भारतीय संविधान का कौन-सा भाग राजभाषा से संबंधित है?
5. राजभाषा नीति का कार्यान्वयन किस मंत्रालय का 'राजभाषा विभाग' देखता है?
6. सरकारी कार्यालयों में राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु दिया जाने वाला सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कार कौन-सा है?
7. राजभाषा नियम 1976 के तहत राज्यों को कितने क्षेत्रों में बाँटा गया है?
8. संविधान की किस अनुसूची में मान्यता प्राप्त भाषाओं को शामिल किया गया है?
9. विश्व भर में 'विश्व हिंदी दिवस' प्रतिवर्ष किस तिथि को मनाया जाता है?
10. संविधान की आठवीं अनुसूची में कुल कितनी भाषाएँ शामिल हैं?
11. राजभाषा पर संसदीय समिति का गठन किस अनुच्छेद के तहत किया जाता है?
12. राजभाषा की संसदीय समिति में कुल कितने सदस्य (लोकसभा और राज्यसभा मिलाकर) होते हैं?
13. 'राजभाषा अधिनियम' संसद द्वारा किस वर्ष पारित किया गया था?
14. राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम किस वर्ष बनाए गए थे?
15. हिंदी में ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन के लिए कौन-सा प्रमुख पुरस्कार दिया जाता है?
16. संविधान में राजभाषा से संबंधित प्रावधान किस अनुच्छेद से किस अनुच्छेद तक हैं?
17. उच्चतम न्यायालय की भाषा: संविधान के किस अनुच्छेद के तहत उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों की भाषा का प्रावधान है?
18. हिंदी भाषा के विकास और प्रसार का निर्देश किस अनुच्छेद में दिया गया है?
19. राजभाषा की संसदीय समिति के अध्यक्ष परंपरा के अनुसार कौन होते हैं?

20. केंद्र सरकार की 'केंद्रीय राजभाषा समिति' के अध्यक्ष कौन होते हैं?

21. केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो किस मंत्रालय के अधीन कार्य करता है?

22. राजभाषा आयोग का गठन सर्वप्रथम किस वर्ष किया गया था?

23. प्रथम राजभाषा आयोग के अध्यक्ष कौन थे?

24. संसद में प्रयोग की जाने वाली भाषा का उल्लेख किस अनुच्छेद में है?

25. राज्य के विधानमंडल में प्रयोग की जाने वाली भाषा किस अनुच्छेद के अंतर्गत आती है?

1. हिंदी
2. देवनागरी
3. 14 सितंबर
4. भाग 17
5. गृह मंत्रालय
6. राजभाषा कीर्ति पुरस्कार
7. तीन ('क', 'ख' और 'ग')
8. आठवीं अनुसूची
9. 10 जनवरी
10. 22
11. अनुच्छेद 344(4)
12. 30 (20 लोकसभा + 10 राज्यसभा)
13. 1963
14. 1976
15. राजभाषा गौरव पुरस्कार
16. अनुच्छेद 343 से 351
17. अनुच्छेद 348
18. अनुच्छेद 351
19. केंद्रीय गृह मंत्री
20. प्रधानमंत्री
21. गृह मंत्रालय
22. 1955
23. बी. जी. खेर
24. अनुच्छेद 120
25. अनुच्छेद 210



प्रकाशक – महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का

कार्यालय, केरलम, तिरुवनंतपुरम